



राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम

भारतश्री

राष्ट्रीय हिंदी साप्ताहिक

सोमवार, 22 सितंबर 2025 • वर्ष 7 • अंक 09 • मूल्य: 5 रुपए

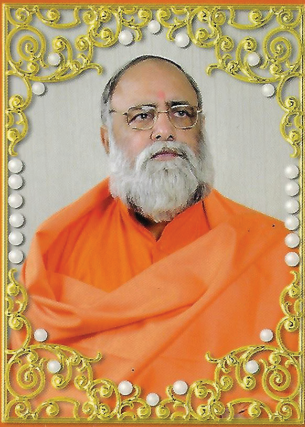
दो जीतों के बाद सूर्यकुमार...



परम पूज्य सद्गुरुदेव जी ने कहा कि परा का मित्र शरीर है जो कि अपरा है और अपरा नाशवान है। मां दुर्गा का कथन है कि पृथ्वी, आकाश, जल, अग्नि, मन, बुद्धि और अहंकार अपरा प्रकृति है जो नाशवान है और निकृष्ट है।

पेज-10-11

सद्गुरु वाणी



विश्वभर में होने वाले प्रभु कृपा दुख निवारण समागम केवल प्रभु की कृपा से संभव होते हैं। इसका आयोजन कोई व्यक्ति नहीं करता।

परमात्मा की नजर में सभी भाई-बहन बराबर हैं। परमात्मा जाति, धर्म, देश, सम्प्रदाय से पार है। हमें सभी भाई-बहनों को समान दृष्टि से देखना चाहिए।

दिव्य पाठ प्रभु कृपा का वह आलोक है जिसे करने के लिए किसी भी प्रकार की कठिन तपस्या या साधना की कोई जरूरत नहीं है। यह बड़ा सहज और सरल है।



H-1B वीजा लॉटरी सिस्टम को खत्म करने जा रहे ट्रम्प

एंट्री लेवल कर्मचारियों के लिए चुनौती, हाई स्किल को होगा फायदा

@ भारतश्री ब्यूरो

अमेरिकी ट्रम्प प्रशासन ने मंगलवार को H-1B वीजा प्रक्रिया में बड़ा बदलाव प्रस्तावित किया है। यह कदम तकनीकी और आउटसोर्सिंग कंपनियों के लिए बड़ा असर डाल सकता है, खासकर उन भारतीय कर्मचारियों के लिए जो अमेरिका में करियर बनाने की योजना बना रहे हैं। H-1B वीजा, जो अमेरिका में उच्च कौशल वाले विदेशी कर्मचारियों को लाने के लिए सबसे लोकप्रिय विकल्प माना जाता है, अब सैलरी-आधारित प्राथमिकता प्रणाली के तहत काम करेगा। पहले यह वीजा लॉटरी सिस्टम के जरिए आवेदकों को दिया जाता था, लेकिन नई योजना के अनुसार वेतन अधिक वाले कर्मचारियों को चुनाव में अधिक मौका मिलेगा।

लॉटरी से सैलरी-आधारित चयन

अभी तक H-1B वीजा आवेदकों का चयन रैंडम लॉटरी सिस्टम से होता था। इसका मतलब था कि किसी भी योग्य आवेदक का चयन लगभग बराबरी के मौके पर होता। अब प्रस्तावित बदलाव में सभी आवेदकों को चार सैलरी कैटेगरी में रखा जाएगा। सबसे अधिक वेतन पाने वाले उम्मीदवारों को लॉटरी में चार बार शामिल किया

जाएगा। सबसे कम वेतन पाने वाले केवल एक बार शामिल होंगे। इस प्रणाली का उद्देश्य हाई स्किल और हाई सैलरी वाले कर्मचारियों को प्राथमिकता देना है। फेडरल रजिस्टर में जारी नोटिस के अनुसार, जनता की राय लेने के लिए 30 दिन का समय दिया गया है।

नया वेतन मानक और कैटेगरी

नई योजना में सबसे उच्च वेतन सीमा \$162,500 (करीब 1.44 करोड़ रुपए) सालाना तय की गई है। इस कैटेगरी में आने वाले उम्मीदवारों को लॉटरी में अधिक मौके मिलेंगे। इसके बाद अन्य तीन कैटेगरी क्रमशः कम वेतन वाले उम्मीदवारों के लिए निर्धारित की गई हैं। इस बदलाव का असर उन कंपनियों और कर्मचारियों पर सीधे पड़ता है, जो अमेरिका में एंट्री या मिड-लेवल नौकरियों के लिए आवेदन करते हैं।

H-1B वीजा की नई फीस

ट्रम्प प्रशासन पहले ही H-1B आवेदन की फीस बढ़ा चुका है। 22 सितंबर 2025 से नए आवेदन पर \$100,000 (करीब 88 लाख रुपए) शुल्क लगेगा। इससे पहले यह केवल लगभग 6 लाख रुपए था। इस फैसले का मकसद केवल चयन प्रक्रिया को बदलना नहीं है, बल्कि अमेरिका में हाई स्किल और हाई वेतन वाले

विदेशी कर्मचारियों को आकर्षित करना भी है।

भारतीय कर्मचारियों पर असर

भारतीय कर्मचारियों के लिए यह बदलाव मिश्रित परिणाम लेकर आएगा। एंट्री लेवल इंजीनियर और नए ग्रेजुएट्स: उच्च वेतन सीमा के कारण H-1B वीजा पाना उनके लिए कठिन होगा। हाई स्किल कर्मचारी (जैसे AI, डेटा साइंस, चिप डिजाइन, साइबर सिक्योरिटी): उन्हें फायदा मिलेगा। भारतीय आईटी कंपनियों की स्थिति पर भी असर पड़ेगा। टीसीएस, इन्फोसिस, विप्रो जैसी कंपनियां ज्यादातर एंट्री और मिड लेवल कर्मचारियों को ही अमेरिका भेजती हैं। इसलिए उन्हें कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। गूगल, माइक्रोसॉफ्ट, अमेज़न जैसी कंपनियों के लिए लाभ होगा, क्योंकि ये हाई स्किल और उच्च वेतन वाले कर्मचारियों को ही लेती हैं।

ट्रम्प की इमिग्रेशन नीतियां

ट्रम्प प्रशासन ने जनवरी 2025 में राष्ट्रपति बनने के बाद से ही सख्त इमिग्रेशन पॉलिसी लागू करने का निर्णय लिया। इसके तहत बड़े पैमाने पर अवैध अप्रवासियों का निर्वासन। अवैध अप्रवासियों के बच्चों को नागरिकता देने में रोक।



ORDER ALL TYPES OF :



- POOJA SAMAGRI,
- AYURVEDIC MEDICINE
- AND PRATIMA.



NOW GET AT YOUR HOME ON
MNDIVINE.COM



ORDER NOW



<https://mndivine.com/>

HELPLINE : 9667793986
(10AM TO 6PM, MON-SAT)



दिल्ली की लवकुश रामलीला में पूनम पांडे को हटा दिया गया धार्मिक और सामाजिक भावनाओं का रखा गया ध्यान

@ शोभित यादव

लं बे विवाद और सामाजिक आपत्तियों के बाद इस साल दिल्ली की लाल किला मैदान में आयोजित होने वाली विश्व प्रसिद्ध लवकुश रामलीला में अभिनेत्री पूनम पांडे को मंदोदरी की भूमिका से हटा दिया गया है। यह निर्णय लवकुश रामलीला समिति द्वारा समाज के विभिन्न वर्गों और धार्मिक संस्थाओं से आई आपत्तियों को ध्यान में रखते हुए लिया गया। विश्व हिंदू परिषद (VHP) ने इस फैसले का स्वागत किया है। वीएचपी ने स्पष्ट किया कि पूनम पांडे को रामलीला में आमंत्रित न करना समाज की धार्मिक भावनाओं और सांस्कृतिक मर्यादाओं का सम्मान करने की दिशा में उठाया गया कदम है।

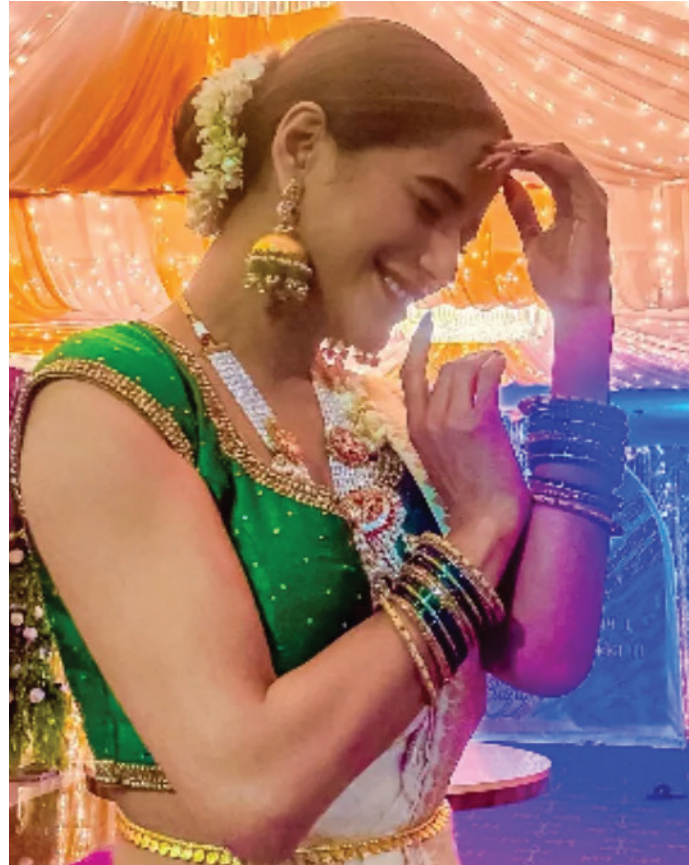
समिति का बयान आया सामने

लवकुश रामलीला समिति के अध्यक्ष अर्जुन कुमार और महासचिव सुभाष गोयल ने प्रेस वार्ता में बताया कि पूनम पांडे को इस वर्ष मंदोदरी की भूमिका निभाने के लिए समिति ने आमंत्रित किया था, और उन्होंने इसे स्वीकार भी किया। हालांकि, जैसे ही यह घोषणा सार्वजनिक हुई, कई संगठनों और समुदायों ने आपत्ति जताई। उनका तर्क था कि मंदोदरी जैसे पवित्र पात्र के लिए कलाकार का चयन करते समय धार्मिक भावनाओं और मर्यादा का विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए।

समिति के पदाधिकारियों ने कहा कि लवकुश रामलीला का मुख्य उद्देश्य भगवान श्रीराम के आदर्श और उनके संदेश को समाज के हर वर्ग तक पहुंचाना है। यदि किसी भी कारण से समाज में भ्रम या आक्रोश उत्पन्न होता है, तो इससे उस मूल उद्देश्य पर प्रतिकूल असर पड़ सकता है। इसी को देखते हुए गहन विचार-विमर्श के बाद समिति ने सर्वसम्मति से निर्णय लिया कि इस वर्ष मंदोदरी की भूमिका किसी अन्य कलाकार से करवाई जाएगी। समिति ने यह भी स्पष्ट किया कि यह निर्णय किसी व्यक्तिगत कारण से नहीं लिया गया है। इसे केवल सामूहिक भावनाओं और धार्मिक मर्यादा को ध्यान में रखते हुए लिया गया। समिति ने यह आशा जताई कि पूनम पांडे इस निर्णय को सकारात्मक रूप में स्वीकार करेंगी।

“अश्लीलता को स्थान देना उचित नहीं हो सकता”

विश्व हिंदू परिषद, इंदरप्रस्थ (दिल्ली) प्रांत ने प्रेस रिलीज जारी कर कहा कि रामलीला समिति का यह निर्णय समाज एवं पूजनीय संतजनों की भावनाओं का सम्मान करने वाला है। वीएचपी ने कहा, “समिति का यह कदम समाज की सांस्कृतिक मर्यादा और धार्मिक परंपराओं की रक्षा की दिशा में एक सराहनीय और अनुकरणीय कदम है। धर्म सदा मर्यादा का संरक्षण करता आया है, और



यह सर्वमान्य सत्य है कि अश्लीलता सदैव मर्यादा का उल्लंघन करती है। अतः मर्यादा के मंच पर अश्लीलता को स्थान देना उचित नहीं हो सकता।”

वीएचपी प्रांत मंत्री सुरेंद्र गुप्ता ने कहा, “हम विश्वास करते हैं कि इस साल की लवकुश रामलीला और भी अधिक सफल, भव्य और जनमानस को प्रेरित करने वाली होगी। विश्व हिंदू परिषद, इंदरप्रस्थ प्रांत रामलीला समिति को अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता है।” यह निर्णय वीएचपी द्वारा पहले ही जताई गई आपत्तियों के संदर्भ में आया है। पिछले सप्ताह की शुरुआत में वीएचपी ने रामलीला में पूनम पांडे को शामिल करने पर विरोध जताया था।

पूनम पांडे का विरोध और विवाद

दिल्ली के लाल किला मैदान में आयोजित होने वाली रामलीला में पूनम पांडे को शामिल करने का विचार समाज और विभिन्न धार्मिक संगठनों के बीच विवाद का विषय बन गया था। आलोचकों का तर्क था कि पूनम पांडे का पिछला काम और छवि मंदोदरी जैसे पवित्र और आदर्श महिला पात्र के अनुरूप नहीं है। हालांकि, लवकुश रामलीला समिति ने शुरू में विरोध को दरकिनार करते हुए अपने फैसले पर अड़ी हुई थी, लेकिन बढ़ते विवाद और सामाजिक दबाव को देखते हुए समिति ने सार्वजनिक हित और धार्मिक भावनाओं का सम्मान करते हुए यह अंतिम

निर्णय लिया। समिति के पदाधिकारियों ने यह भी कहा कि रामलीला का उद्देश्य भगवान राम के आदर्श और उनकी शिक्षाओं को समाज तक पहुंचाना है। यदि किसी भी कारण से समाज में भ्रम या आक्रोश उत्पन्न होता है, तो इससे रामलीला का मूल संदेश प्रभावित हो सकता है।

इस साल की रामलीला का आयोजन

इस बार लवकुश रामलीला 22 सितंबर से 3 अक्टूबर तक आयोजित की जाएगी। मंच पर रावण का किरदार बॉलीवुड अभिनेता आर्य बब्बर निभा रहे हैं। राम की भूमिका में किशुक वैद्य, सीता की भूमिका में रिनी आर्य, और परशुराम की भूमिका में भाजपा सांसद मनोज तिवारी नजर आएंगे। समिति ने यह भी कहा कि मंदोदरी की भूमिका इस बार किसी अन्य कलाकार द्वारा निभाई जाएगी। यह निर्णय पूरी तरह सामूहिक और पारंपरिक भावनाओं को ध्यान में रखकर लिया गया है।

कलाकारों और समाज की प्रतिक्रिया

समिति के निर्णय के बाद कई सामाजिक और धार्मिक संगठनों ने इस कदम का स्वागत किया है। उनका कहना है कि रामलीला जैसे धार्मिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में कलाकार का चयन करते समय धार्मिक मर्यादा और समाज की भावनाओं का ध्यान रखना आवश्यक है। कुछ कलाकारों और कला विशेषज्ञों ने भी कहा कि यह कदम

रामलीला की गरिमा और सांस्कृतिक परंपरा को बनाए रखने की दिशा में सकारात्मक है। हालांकि, पूनम पांडे के समर्थक और उनके प्रशंसक इस निर्णय से नाराज हैं, लेकिन समिति ने कहा कि यह किसी व्यक्तिगत विरोध का परिणाम नहीं है। समिति ने सभी कलाकारों और दर्शकों से आग्रह किया कि वे इस फैसले को सकारात्मक दृष्टिकोण से समझें और रामलीला के संदेश को समाज तक पहुंचाने में सहयोग करें।

सांस्कृतिक और धार्मिक दृष्टि

लवकुश रामलीला समिति के पदाधिकारियों ने कहा कि रामलीला का उद्देश्य केवल नाटक प्रस्तुत करना नहीं है, बल्कि भगवान श्रीराम के आदर्शों और शिक्षाओं को समाज के हर वर्ग तक पहुंचाना है। मंदोदरी जैसी पवित्र भूमिका में कलाकार का चयन करते समय सांस्कृतिक मर्यादा और धार्मिक भावनाओं का विशेष ध्यान रखना अनिवार्य है। वीएचपी ने भी इस बात को दोहराया कि धर्म और मर्यादा का संरक्षण समाज की जिम्मेदारी है। अश्लीलता और विवादित छवि रखने वाले कलाकार का चयन धार्मिक नाट्य मंचों पर उचित नहीं माना जा सकता। पूरे विवाद और आपत्तियों के बाद, यह साफ हो गया है कि समाज की भावनाओं और सांस्कृतिक मर्यादाओं का सम्मान रामलीला जैसे धार्मिक आयोजनों में सर्वोपरि है।

त्योहार से पहले खुशखबरी

रेलकर्मियों को बोनस, बिहार को हाईवे-रेलवे प्रोजेक्ट्स



@ रिकू विश्वकर्मा

त्योहारों से ठीक पहले केंद्र सरकार ने देशभर के लोगों को बड़ी खुशखबरी दी है। बुधवार को हुई कैबिनेट बैठक में दो बड़े फैसले लिए गए। पहला, रेलवे के ग्रुप C और D स्तर के कर्मचारियों को 78 दिनों का बोनस देने का ऐलान हुआ है। दूसरा, बिहार के लिए हाईवे और रेलवे से जुड़े बड़े प्रोजेक्ट्स को मंजूरी दी गई है। इन दोनों फैसलों का असर सीधे लाखों परिवारों की जिंदगी पर पड़ेगा और साथ ही अर्थव्यवस्था को भी रफ्तार मिलेगी।

रेलवे कर्मचारियों के लिए 78 दिन का बोनस

त्योहारों से पहले रेलवे कर्मचारियों के लिए यह सबसे बड़ा तोहफा माना जा रहा है। कैबिनेट ने फैसला किया है कि इस साल भी रेलवे कर्मचारियों को 78 दिन का प्रोडक्टिविटी लिंकड बोनस (PLB) मिलेगा। इस फैसले से देशभर के करीब 11.5 लाख कर्मचारी लाभान्वित होंगे। बोनस की राशि सीधे कर्मचारियों के बैंक खातों में डाली जाएगी और जल्द ही भुगतान की प्रक्रिया शुरू की जाएगी। बोनस पाने वाले कर्मचारियों में ट्रैक मटेनर, लोको पायलट, ट्रेन मैनेजर (गार्ड), स्टेशन मास्टर, पर्यवेक्षक, तकनीशियन और तकनीशियन हेल्पर, पॉइंट्समैन, मिनिस्ट्रियल स्टाफ और अन्य ग्रुप C कर्मचारी

क्यों दिया जाता है यह बोनस?

रेलवे के नॉन-गजटेड कर्मचारियों को हर साल यह बोनस दिया जाता है। इसे प्रोडक्टिविटी लिंकड बोनस (PLB) कहा जाता है। इसका मकसद है कर्मचारियों को प्रोत्साहित करना और उनकी मेहनत का सम्मान



करना। त्योहारों के मौसम में मिलने वाले बोनस का असर सिर्फ कर्मचारियों तक ही सीमित नहीं रहता, बल्कि इसका सीधा फायदा बाजार और उद्योग-धंधों को भी मिलता है। जानकारों का कहना है कि जब लोगों के हाथ में ज्यादा पैसा आता है तो वे ज्यादा खर्च करते हैं। इससे बाजार में पैसों का फ्लो बढ़ता है, व्यापारियों की बिक्री बढ़ती है और अर्थव्यवस्था में नई ऊर्जा आती है। इसी बीच हाल ही में सरकार ने जीएसटी दरों में भी कुछ बदलाव किए हैं। इससे भी उम्मीद है कि आने वाले दिनों में बाजार में तेजी देखी जाएगी।

बिहार को मोदी सरकार का तोहफा

बुधवार की कैबिनेट बैठक में रेलवे बोनस के साथ ही बिहार के लिए भी बड़ी घोषणाएं हुईं। चुनावी साल में बिहार को हाईवे और रेलवे से जुड़े दो बड़े प्रोजेक्ट्स की सौगात मिली है। कैबिनेट ने 3,169 करोड़ रुपये

की लागत से इस रेल लाइन (177 किलोमीटर) के दोहरीकरण को मंजूरी दी है। इस प्रोजेक्ट की वजह से बिहार, झारखंड और बंगाल के बीच कनेक्टिविटी मजबूत होगी। अभी ज्यादातर ट्रेनें भागलपुर से मालदा टाउन होकर रामपुरहाट और हावड़ा जाती हैं। दोहरीकरण के बाद भागलपुर से दुमका और रामपुरहाट की तरफ सीधी गाड़ियां चलेगी। देवघर धाम जैसे बड़े तीर्थस्थल तक पहुंचना आसान होगा। मालगाड़ियों और पैसेंजर ट्रेनों दोनों के लिए रास्ता सुगम होगा। मोकामा-मुंगेर सेक्शन में 4-लेन ग्रीनफील्ड हाईवे

दूसरा बड़ा प्रोजेक्ट है मोकामा-मुंगेर सेक्शन को 4-लेन ग्रीनफील्ड एक्सेस-कंट्रोल्ड हाईवे के रूप में विकसित करना। इसकी लागत 4,447 करोड़ रुपये है और यह 82.4 किलोमीटर लंबा होगा। इस हाईवे के बनने के बाद बक्सर से लेकर पटना और आगे भागलपुर तक का नेटवर्क और मजबूत होगा। इस सेक्शन से सफर का समय

करीब एक घंटे कम होगा। यह हाईवे मोकामा, बड़हिया, लखीसराय, जमालपुर और मुंगेर होकर गुजरेगा, जिससे पूरे क्षेत्र को फायदा मिलेगा।

केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने प्रोजेक्ट्स का ऐलान करते हुए कहा कि यह सिर्फ चुनावी वादे नहीं हैं बल्कि देशभर में चल रही विकास योजनाओं का हिस्सा हैं। उन्होंने बताया कि, "बिहार में गंगा जी के दक्षिण हिस्से में बक्सर से भागलपुर तक का कॉरिडोर बहुत अहम है। इसमें कहीं फोर लेन, कहीं सिक्स लेन हाईवे पहले से बन चुका है। आज जो नया प्रोजेक्ट मंजूर हुआ है, वह इस नेटवर्क को और मजबूत करेगा।" त्योहारों से पहले केंद्र सरकार के ये फैसले देशभर के लोगों के लिए राहत और खुशी लेकर आए हैं। रेलवे कर्मचारियों को 78 दिनों का बोनस मिलने से लाखों परिवारों का उत्साह दोगुना होगा। वहीं, बिहार को दिए गए रेलवे और हाईवे प्रोजेक्ट्स राज्य के विकास की दिशा में मील का पत्थर साबित होंगे।

नवरात्रि के नौ रंग

देवियों की कृपा और जीवन के संदेश

नवरात्रि का समय आते ही हवा में एक अलग ही उत्साह भर जाता है। सितंबर 22, 2025 से शुरू होकर अक्टूबर 2 तक चलने वाला यह त्योहार नौ दिनों का होता है, जिसमें हम माँ दुर्गा के नौ रूपों की पूजा करते हैं। हर दिन एक खास रंग होता है, जो न सिर्फ पूजा की चूड़ियों या साड़ियों में झलकता है, बल्कि हमारे मन की गहराइयों को भी छूता है। ये रंग सिर्फ कपड़ों की बात नहीं, बल्कि जीवन के अलग-अलग पहलुओं को दर्शाते हैं – शुद्धता से लेकर प्रेम तक। सोचिए, एक साधारण सा सफेद रंग कैसे शांति का प्रतीक बन जाता है, या लाल कैसे ताकत देता है। आज हम इन नौ रंगों की पूरी सूची देखेंगे, हर रंग का मतलब समझेंगे और जिस देवी की पूजा उस दिन होती है, उसके बारे में जानेंगे। ये जानकारी ताजा वेब स्रोतों से ली गई है, ताकि सब कुछ सटीक हो। लेकिन याद रखिए, परंपराओं में थोड़े-बहुत बदलाव हो सकते हैं, क्योंकि हर क्षेत्र की अपनी मान्यताएँ हैं। आइए, इस रंगीन यात्रा पर चलें, और देखें कि कैसे ये रंग हमें खुद के बारे में सोचने पर मजबूर कर देते हैं। क्या हम इन रंगों से सिर्फ उत्सव मनाते हैं, या जीवन में कुछ बदलाव लाते हैं? चलिए, धीरे-धीरे समझते हैं।

पहले तीन दिन: शुद्धता, शक्ति और शांति का सफर

नवरात्रि की शुरुआत हमेशा एक नई शुरुआत की तरह लगती है। पहले तीन दिन जैसे आधार तैयार करते हैं – शुद्ध मन से ताकत और शांति तक। ये दिन हमें याद दिलाते हैं कि जीवन में पहले खुद को साफ करना पड़ता है, फिर आगे बढ़ना।

पहला दिन, २२ सितंबर, सफेद रंग का है। इस दिन माँ शैलपुत्री की पूजा होती है। माँ शैलपुत्री हिमालय की बेटी हैं, पार्वती का पहला रूप। कथा है कि वे भगवान शिव से विवाह करने के लिए कठोर तपस्या करती हैं। वे बैल पर सवार होकर त्रिशूल और कमल लिए हुए हैं। सफेद रंग शुद्धता और मासूमियत का प्रतीक है। यह रंग पहनकर हम अंदरूनी शांति और सुरक्षा की कामना करते हैं। कल्पना कीजिए, सुबह उठकर सफेद साड़ी पहनना – जैसे मन का सारा मैल धुल जाता हो। आजकल शहरों में लोग इसे फैशन स्टेटमेंट बनाते हैं, लेकिन मूल में यह शांति की पुकार है। क्या हम रोज सफेद पहनकर खुद को इतना शुद्ध महसूस कर पाते हैं? यह रंग प्रकृति की बर्फीली चोटियों जैसा है, जो ठंडक देता है लेकिन मजबूत भी रखता है। पूजा में सफेद फूल चढ़ाना शुभ माना जाता है। इस दिन उपवास रखने वाले लोग दूध-फल खाते हैं, ताकि शरीर भी शुद्ध रहे। लेकिन एक बात सोचने लायक है – अगर शुद्धता सिर्फ रंग से आ जाए, तो क्यों न हम रोज थोड़ा सफेद अपनाएँ, जैसे विचारों में?

दूसरा दिन, 23 सितंबर, लाल रंग का होता है। माँ ब्रह्मचरिणी की पूजा इस दिन की जाती है। वे तपस्विनी रूप हैं, जपमाला और कमंडलु लिए हुए। कथा के



अनुसार, वे शिव को पाने के लिए वर्षों का तप करती हैं, बिना भोजन-पानी के। लाल रंग जुनून, प्रेम और ताकत का प्रतीक है। यह रंग पहनकर हम ऊर्जा और जीवन शक्ति महसूस करते हैं। लाल चूड़ियाँ चढ़ाना तो जैसे माँ को अपना प्यार भेंटना है। लेकिन देखिए, लाल सिर्फ गुस्से का नहीं, बल्कि साहस का भी रंग है। ग्रामीण इलाकों में महिलाएँ लाल साड़ी में गणगौर करती हैं, जबकि शहरों में यह बॉलीवुड स्टाइल बन जाता है। क्या लाल हमें सिर्फ उत्साहित करता है, या जीवन की चुनौतियों से लड़ने की हिम्मत भी? इस दिन पूजा में लाल फूल और मिठाई चढ़ाई जाती है। उपवास में फलाहार रखें, लेकिन याद रखें, तपस्या का मतलब है संयम। ये रंग हमें बताते हैं कि शक्ति बिना प्रयास के नहीं मिलती।

तीसरा दिन, 24 सितंबर, रॉयल ब्लू रंग का है। माँ चंद्रघंटा की पूजा होती है। वे चंद्रमा की घंटी वाली हैं, माथे पर अर्धचंद्र। कथा है कि वे राक्षसों से हमेशा युद्ध के लिए तैयार रहती हैं, भय दूर करने वाली। रॉयल ब्लू समृद्धि, शांति और गहराई का प्रतीक है। यह रंग पहनकर हम धन और मानसिक शांति की कामना करते हैं। नीला समुद्र जैसा लगता है – गहरा लेकिन शांत। पूजा में नीले फूल और दूध का भोग लगता है। आज के दौर में, यह रंग सूट्स में पॉपुलर है, लेकिन आध्यात्मिक रूप से यह विवाहित पार्वती का रूप दर्शाता है। क्या हम इस गहराई को अपनी जिंदगी में उतार पाते हैं, या सिर्फ सतह पर रह जाते हैं? ये तीन दिन हमें सिखाते हैं कि शुद्धता से शक्ति बनी है, और शक्ति से शांति। लेकिन परंपरा में कुछ जगहों पर रंग थोड़े अलग होते हैं, जैसे गुजरात में ज्यादा चटक रंग। फिर भी, मूल संदेश वही रहता है – संतुलन।

चौथा से छठा दिन: सृजन, मातृत्व और संतुलन की कहानी

नवरात्रि के बीच के दिन जैसे जीवन का मध्य भाग हैं – सृजन से संतुलन तक। ये दिन हमें बताते हैं कि नई शुरुआत के बाद ग्रोथ आती है, लेकिन उसके लिए माँ जैसा प्यार और बैलेंस जरूरी है। सोचिए, बिना आधार

के ऊँचाई कैसे बनेगी?

चौथा दिन, 25 सितंबर, पीला रंग का है। माँ कूष्मांडा की पूजा इस दिन होती है। वे सृष्टि की रचयिता हैं, जिनके हाथ से ब्रह्माण्ड बना। आठ भुजाओं वाली, सिंह पर सवार। पीला रंग सकारात्मक ऊर्जा, खुशी और समृद्धि का प्रतीक है। यह रंग पहनकर हम उत्साह महसूस करते हैं, जैसे सूरज की किरणें। पूजा में पीले फूल, हलवा का भोग। ग्रामीण घरों में पीली साड़ी में माँ को सजाना एक रस्म है। लेकिन आधुनिक समय में, यह कलर कोऑर्डिनेशन का हिस्सा बन गया है। क्या पीला सिर्फ खुशी लाता है, या हमें सृजन की शक्ति भी याद दिलाता है? इस दिन उपवास में पीले फल जैसे केला खाना शुभ। कथा सुनकर लगता है, माँ का मुस्कान कितना कुछ बदल सकता है – हमारी जिंदगी में भी तो ऐसा ही है।

पांचवां दिन, 26 सितंबर, हरा रंग का होता है। माँ स्कंदमाता की पूजा की जाती है। वे कार्तिकेय की माँ हैं, चार भुजाओं वाली, सिंह पर। कथा में वे देवताओं की रक्षा करती हैं। हरा रंग प्रकृति, नई शुरुआत, विकास और शांति का प्रतीक है। यह रंग पहनकर हम उर्वरता और सामंजस्य की कामना करते हैं। हरा जैसे जंगल की साँस है – ताजी और जीवंत। पूजा में हरे पत्ते, सब्जी का भोग। आजकल इको-फ्रेंडली फैशन में हरा ट्रेंडिंग है, लेकिन मूल में यह विकास का संदेश है। क्या हम हरियाली को सिर्फ देखते हैं, या खुद में उगाते हैं? उपवास में हरी सब्जियाँ खाकर शरीर को तरोताजा रखें। ये दिन मातृत्व का प्रतीक है, जो हमें परिवार की अहमियत सिखाता है।

छठा दिन, 27 सितंबर, ग्रे रंग का है। माँ कात्यायनी की पूजा होती है। वे ऋषि कात्यायन की पुत्री हैं, महिषासुर की हत्यारी। अठारह भुजाओं वाली, सिंह पर। ग्रे रंग भावनाओं का संतुलन और जमीन से जुड़ाव का प्रतीक है। यह रंग पहनकर हम स्थिरता महसूस करते हैं। ग्रे जैसे बादल – न ज्यादा काला, न सफेद। पूजा में ग्रे फूल दुर्लभ, लेकिन सफेद-काले मिश्रित। शहरों में ग्रे सूट्स में इसे मॉडर्न टच देते हैं। लेकिन क्या ग्रे हमें सिखाता है कि जीवन में ग्रेजोन भी जरूरी हैं, ब्लैक-

व्हाइट नहीं? कथा में माँ की तपस्या से जन्म, जो संतुलन सिखाती है। उपवास में सादा भोजन। ये तीन दिन बताते हैं कि सृजन के बाद बैलेंस आता है, वरना सब बिखर जाता। परंपराओं में कुछ जगह ग्रे की जगह भूरा, लेकिन संदेश वही।

सातवां से नौवां दिन: ऊर्जा, करुणा और प्रेम की ज्योति

नवरात्रि के आखिरी दिन जैसे चरम पर पहुँच जाते हैं – ऊर्जा से प्रेम तक। ये दिन हमें सिखाते हैं कि संघर्ष के बाद करुणा आती है, और अंत में प्रेम। जैसे कोई कहानी का क्लाइमेक्स, जो सोचने पर मजबूर कर दे।

सातवां दिन, 28 सितंबर, नारंगी रंग का है। माँ कालरात्रि की पूजा होती है। वे अंधकार नाशिनी हैं, काले रूप वाली, गधे पर सवार। कथा में वे राक्षसों का संहार करती हैं। नारंगी रंग गर्माहट, उत्साह और सकारात्मकता का प्रतीक है। यह रंग पहनकर हम जीवंत महसूस करते हैं। नारंगी जैसे सूर्यास्त – चमकदार लेकिन शांत। पूजा में नारंगी फूल, फल का भोग। गाँवों में नारंगी चूड़ियाँ बाँटना शुभ। आजकल यह कलर ब्लॉकिंग में हिट है। क्या नारंगी हमें अंधकार से लड़ने की ताकत देता है? उपवास में नारंगी जूस। कथा डराती भी है, लेकिन साहस सिखाती है।

आठवां दिन, 29 सितंबर, मोर ग्रीन रंग का होता है। माँ महागौरी की पूजा की जाती है। वे श्वेत रूप वाली, शुद्धता की देवी। कथा में वे तप से गोरी हो जाती हैं। मोर ग्रीन अनोखापन, करुणा और ताजगी का प्रतीक है। यह रंग पहनकर हम नयापन महसूस करते हैं। मोर ग्रीन जैसे पंख – रंगीन लेकिन कोमल। पूजा में हरे फूल, दही का भोग। आधुनिक फैशन में यह एमराल्ड ग्रीन कहलाता है। लेकिन क्या यह हमें करुणा सिखाता है, जो दुनिया बदल सकती है? उपवास में हरी चीजें। ये दिन शुद्धता का चरम है।

नौवां दिन, 30 सितंबर, गुलाबी रंग का है। माँ सिद्धिदात्री की पूजा होती है। वे सिद्धियाँ देने वाली, कमल पर विराजमान। कथा में शिव को सिद्धियाँ देती हैं। गुलाबी रंग प्रेम, सद्भाव और स्नेह का प्रतीक है। यह रंग पहनकर हम आकर्षक लगते हैं। गुलाबी जैसे फूल – नरम लेकिन सुंदर। पूजा में गुलाबी मिठाई। शहरों में पिक पार्टी का ट्रेंड। क्या गुलाबी हमें रिश्तों में प्रेम लाने की याद दिलाता है? उपवास तोड़ना कन्याओं को भोजन देकर। ये दिन समापन का प्रतीक।

रंगों से क्या सीखें हम?

नवरात्रि के ये नौ रंग सिर्फ त्योहार नहीं, जीवन का आईना हैं। सफेद से गुलाबी तक, हर रंग एक संदेश देता है – शुद्धता से प्रेम तक। लेकिन सोचिए, क्या हम इन्हें सिर्फ नौ दिन पहनते हैं, या साल भर अपनाते हैं? परंपराएँ कहती हैं पूजा के लिए, लेकिन आधुनिक दृष्टि में ये मनोविज्ञान से जुड़े हैं – रंग मूड बदलते हैं।

गांधी विचार और संघ

मैंने अपने जीवन में साम्यवाद समर्थक गांधीवादियों के साथ मिलकर 10—15 वर्षों तक काम किया है। ये गांधीवादी अहिंसा के समर्थक थे और नक्सलियों तक को अहिंसा का पाठ पढ़ाते थे। देहरादून के एक साथी विजय शंकर शुक्ल वास्तव में गांधीवाद को समझते थे, लेकिन वे भी इस साल चले गए। अब जो बचे हैं, उनमें से दो-तीन को छोड़कर बाकी सब कम्युनिस्ट हैं। उन्हें इस बात से बहुत बुरा लगता है कि संघ के लोग गांधी विचारों की प्रशंसा करते हैं। मैं ऐसे सैकड़ों कम्युनिस्टों को देख चुका हूं और आज भी देख रहा हूं। इन्हें अहिंसा से नफरत है, इन्हें केवल आरक्षण चाहिए और ये गांधी विचार की वास्तविकता से हमेशा चिढ़ते हैं, क्योंकि ये गांधी के नाम की दुकानदारी करते हैं। और जब नरेंद्र मोदी, मोहन भागवत, बजरंगमुनि, नरेंद्र सिंह जी, ज्ञानेंद्र आर्य जी जैसे हजारों लोग साम्यवाद का विरोध करते हैं, तब ये तथाकथित संघ विरोधी, विरोध के नाम पर हमारे गांधी समर्थन का विरोध करते हैं। मुझे खुशी है कि इनकी संख्या बहुत तेजी से घट रही है और अगले दो-चार सालों में और घट जाएगी, क्योंकि संघ ने प्रवीण तोगड़िया और ठाकरे परिवार से दूरी बना ली है। मैं गांधी विचार और संघ परिवार के साथ चल रहा हूं और मैं वर्तमान स्थिति से पूरी तरह संतुष्ट हूं।

बजरंग मुनि

जब हिटलर ने मुसोलिनी को माना गुरु

@ नितिन ठाकुर

आए आज आपको दो ऐसे दोस्तों की छोटी सी कहानी सुनाता हूं जो इतिहास में दर्ज हो चुकी है। दोनों ही अपने देश में लोकप्रियता का चरम पाकर लोकतंत्र को भूल गए थे। दोनों ही ने अपने देश के पुराने गौरव को लौटा लाने का जनता से वादा किया था। दोनों मन ही मन एक-दूसरे को तुच्छ समझते थे लेकिन सावर्जनिक तौर पर दोस्ती का जोरदार प्रदर्शन करते हुए अपने-अपने देश में एक-दूसरे का भव्य स्वागत करते थे। इनमें एक का नाम था हिटलर और दूसरा था मुसोलिनी। पहले वाला जर्मनी का तानाशाह था और दूसरे ने इटली पर कब्जा जमाया था। ये बात स्पष्ट है कि दोनों में हिटलर ज्यादा चर्चित है लेकिन तथ्य ये है कि खुद हिटलर मुसोलिनी को प्रेरणास्रोत माना करता था, भले ही बाद में उसके विचार कुछ बदले भी हों। अब इस कहानी को पढ़ें और पढ़ते हुए आसपास घट रही घटनाओं पर भी नज़र रखते चलें।

मुसोलिनी ने फासीवाद को जन्म दिया था जो एक अतिराष्ट्रवादी विचारधारा थी जिसके मुताबिक एक देश में एक दल और उसके एक नेता का शासन ही बेहतर है हिंसा को इस विचारधारा में बुरा नहीं माना जाता।

खैर, मुसोलिनी 1922 में अपने देश इटली का प्रधानमंत्री बन गया था। मुसोलिनी के करीब तीस हजार समर्थकों ने देश की राजधानी को घेर लिया था जिसके बाद तत्कालीन प्रधानमंत्री ने इस्तीफा दे दिया और राजा ने लॉर्ड ऑर्डर बनाए रखने के लिए उसे सरकार बनाने का न्यौता दिया। उस वक़्त हिटलर की राजनैतिक नाज़ी पार्टी घुटनों पर चलना बंद करके पांवों पर खड़ा होना सीख रही थी। इस घटना ने हिटलर को बेहद प्रभावित किया। एक तरफ तो वो मुसोलिनी का लोहा मान गया और दूसरी तरफ फासीवादियों के तरीके ने उसे प्रेरित किया कि वो भी ऐसा ही कुछ करके सत्ता पा ले। हालांकि दस साल बाद हिटलर सत्ता पा भी गया लेकिन उसने मुसोलिनी के रास्ते से चॉसलरशिप नहीं पाई। उसने मुसोलिनी से भी ज्यादा साजिशें रचीं। इतिहासकारों ने इटली के फासीवाद को जर्मनी के नाज़ीवाद का बड़ा भाई बताया है।

शुरू-शुरू में मुसोलिनी अपने सामने हिटलर को कुछ खास समझता नहीं था। हालांकि हिटलर के दल को खड़ा करने में उसने आर्थिक सहायता जरूर दी क्योंकि नफरत पर टिके उनके सिद्धांत फासीवादियों की नीति से मिलते-जुलते थे। मुसोलिनी के देश इटली का अपना एक शानदार इतिहास था। वो उसे लौटा लाना चाहता था। देश के स्वर्णिम काल को लौटाने की बात हिटलर भी करता था लेकिन मुसोलिनी अकेले में उस पर हंसता था और उपेक्षापूर्ण बातें करता था। मुसोलिनी ने जिस तरह सत्ता पाई थी वो उसे हिटलर के

सत्ता पाने के तरीके से बेहतर और शानदार मानता था। उसे इटली का इतिहास अधिक चमकीला भी लगता था। वो नाज़ियों की आर्य वाली थ्योरी की भी खिल्ली उड़ाता था क्योंकि उसके लिए रोमन अधिक महान थे। गनीमत है कि तब ट्विटर वगैरह नहीं था वरना हो सकता है कि मुसोलिनी कभी-कभार खुलकर ट्वीट करके हिटलर की कुछ आलोचना भी कर दिया करता, मगर मजबूरी बड़ी चीज़ है। उसी चीज़ ने मुसोलिनी को मजबूर किया। दुनिया के सामने उसे हिटलर का हाथ पकड़कर उसे दोस्त कहना पड़ता था, भले ही अंदर से वो उसके प्रति वैरभाव रखता था। यहां तक कि मुसोलिनी खुद हिटलर की उस आत्मकथा को बोरिंग मानता था जिसे नाज़ी जर्मनी में बाइबिल का दर्जा दे दिया गया था। इसी के आधार पर उसने हिटलर के विचारों को उज्जड़ और सधारण माना था।

दोनों नेताओं के बीच जून 1934 को पहली मुलाकात इटली के वेनिस में संपन्न हुई। उस बैठक में गज़ब का बंटोधार हुआ था। खुद को जरूरत से ज्यादा ज्ञानी समझनेवाले मुसोलिनी ने हिटलर से बात करने के लिए जर्मन बोलनी शुरू की। उसने अनुवादक लेने से मना कर दिया। उधर हिटलर खुद तो ऑस्ट्रिया में पैदा हुआ था तो उसी लहजे में जर्मन बोलता था। मुसोलिनी की समझ में आधी से ज्यादा चीज़ें आई ही नहीं। बेवजह रौब गालिब करने के चक्कर में वो फंस गया। दूसरी तरफ हिटलर का घमंड भी आसमान से कम ऊंचा नहीं था। उसे अपनी हर बात बढ़ा-चढ़ाकर बताने की आदत थी और यहां तो उसका रोलमॉडल बैठा था जो उस दौर में नाज़ी पार्टी का बड़ा मददगार भी था। हिटलर की आदत थी कि वो सामने वाले को बोलने नहीं देता था। अकेला ही लंबी-लंबी बात करता था। कहा जाता है कि मुसोलिनी बुरी तरह बोर होकर बैठक से निकला। इस बैठक के बाद दोनों ही एक-दूसरे को अपने से नीचा मानने लगे। हालांकि पब्लिकली दोनों को साथ दिखना था क्योंकि कूटनीतिक विवशता थी।

इसके बाद इटली ने जब 1935 में अबीसीनिया (आज इथियोपिया) पर धावा बोला और दुनिया में बेइज्जत हुआ तब हिटलर ने उसका साथ दिया। तब की दुनिया में संयुक्त राष्ट्र संघ नहीं था, उसकी जगह लीग ऑफ नेशंस था। जर्मनी को हिटलर ने 1933 में ही इससे बाहर निकाल लिया था। स्पेनिश सिविल वॉर में भी दोनों दोस्तों की खूब छनी। आखिरकार 1937 का सितंबर आया (संयोग से वही चल रहा है) और मुसोलिनी ने जर्मनी का शानदार दौरा किया। हिटलर पूरा बिछ ही गया। मुसोलिनी इतना प्रभावित हुआ कि जापान-जर्मनी के उस पाले में शामिल हो गया जिसे आनेवाले दिनों में विश्वयुद्ध हारकर बर्बाद होना था। यहां तक कि उसने इटैलियन यहूदियों को सरकारी नौकरियों और नागरिकता से निकाल फेंकने का आदेश तक जारी कर दिया ताकि उसका यहूदी विरोधी दोस्त हिटलर खुश हो सके।

जुबानी तीर

“



जानने का पूरा अधिकार है।

प्रशांत किशोर (जन सुराज नेता)

“



पारदर्शी रहा हूँ और सच सामने आया।

सम्राट चौधरी (उपमुख्यमंत्री, बिहार)

“



क्या नेताओं की छवि जनता के विश्वास के अनुरूप है?

राहुल गांधी (कांग्रेस नेता, विपक्ष)





हाईवे हिप्नोसिस: आधुनिक समस्या का आयुर्वेदिक समाधान

@ डॉ महिमा मक्कर

तेज रफ्तार जीवनशैली और लंबे सफ़र की थकान के बीच आजकल “हाईवे हिप्नोसिस” एक नई और गंभीर समस्या बनकर सामने आ रही है। यह स्थिति तब होती है जब वाहन चालक लंबे समय तक हाईवे पर एकसमान ड्राइविंग करते हुए अचेतन अवस्था में चला जाता है। सड़क, गाड़ियाँ और दृश्य सब सामने होते हैं, लेकिन मस्तिष्क धीरे-धीरे ऑटो-पायलट मोड पर पहुँच जाता है। ऐसे में ड्राइवर वाहन को नियंत्रित तो करता है, मगर उसका ध्यान और सजगता कम हो जाती है। सड़क दुर्घटनाओं के कई मामलों की जड़ यही समस्या मानी जा रही है। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान इसे फोकस्ड अटेंशन की कमी और थकान से उत्पन्न अर्ध-निद्रा से जोड़ता है। लेकिन आयुर्वेद के नज़रिए से देखें तो यह मन और इंद्रियों की असंतुलित स्थिति का परिणाम है।

हाईवे हिप्नोसिस: आयुर्वेदिक दृष्टि से समझना

आयुर्वेद के अनुसार, शरीर और मन को संचालित करने वाली मुख्य शक्तियाँ वात, पित्त और कफ दोष हैं। लगातार एक ही मुद्रा में बैठना, सड़क पर एकसमान दृश्य, और मानसिक थकान, ये सब वात दोष की वृद्धि करते हैं। वात का असंतुलन मन को चंचल और अस्थिर बना देता है। इस कारण ड्राइवर का ध्यान बार-बार भटकता है और वह अर्धनिद्रा की स्थिति में पहुँच जाता है। आयुर्वेद में इसे “मनः क्लान्ति” (मानसिक थकान) और “अल्प निद्रा जन्य विकार” (नींद की गड़बड़ी से उत्पन्न रोग) की श्रेणी में रखा जा

सकता है।

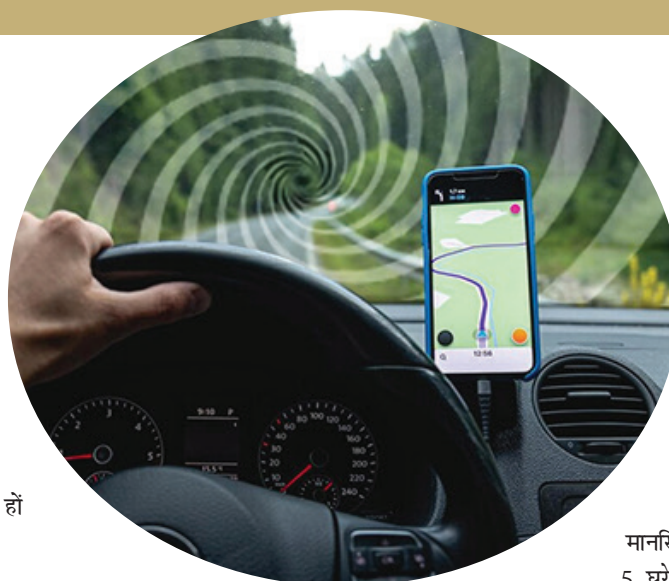
लक्षण
हाईवे हिप्नोसिस के संकेत धीरे-धीरे सामने आते हैं:
आँखों में भारीपन या बार-बार झपकना
याद न रहना कि पिछली कुछ किलोमीटर ड्राइव कैसे की
एकाग्रता में कमी
मन में बेरियत या सुस्ती
अचानक झटका लगना जैसे नींद से जागे हों
आयुर्वेदिक उपचार और उपाय

1. आहार (Diet Therapy)

आयुर्वेद में कहा गया है: “यथाऽन्नं तथा मनः” यानी भोजन का सीधा असर मन पर होता है।
ड्राइव से पहले हल्का और सुपाच्य भोजन लें।
तैलीय, मसालेदार और भारी भोजन से बचें, क्योंकि ये कफ को बढ़ाते हैं और नींद लाते हैं।
ताजे फल जैसे सेब, संतरा या मौसमी यात्रा में उपयोगी हैं।
पानी और नींबू शहद का सेवन ऊर्जा और ताजगी बनाए रखता है।

2. औषधियाँ (Herbal Remedies)

ब्राह्मी और शंखपुष्पी: ये दोनों मस्तिष्क टॉनिक हैं, स्मृति और ध्यान शक्ति बढ़ाते हैं।
अश्वगंधा: मानसिक तनाव और थकान को कम करने में प्रभावी।



जटामांसी: नींद और एकाग्रता दोनों में संतुलन लाती है।
यष्टिमधु (मुलेठी): गले को तरोताजा रखने और ऊर्जा बढ़ाने में सहायक।
इन औषधियों का सेवन पाउडर, काढ़ा या टैबलेट के रूप में आयुर्वेद चिकित्सक की देखरेख में किया जाना चाहिए।

3. दिनचर्या और योग (Lifestyle & Yoga)

लंबे सफर से पहले पर्याप्त नींद लेना अनिवार्य है।
हर 2-3 घंटे में गाड़ी रोककर हल्का स्ट्रेचिंग और गहरी साँसें लेना चाहिए।
योगासन जैसे ताड़ासन, भुजंगासन, शशांकासन शरीर की ऊर्जा को संतुलित रखते हैं।
प्राणायाम (अनुलोम-विलोम, भ्रामरी और

कपालभाति) मानसिक सजगता बढ़ाते हैं।

4. ध्यान और मानसिक अभ्यास (Meditation & Mind Training)

आयुर्वेद में धारणा और ध्यान को मन की स्थिरता के लिए सर्वोत्तम माना गया है।
ड्राइव से पहले 5-10 मिनट ध्यान या श्वास पर एकाग्रता करना, मन को शांत और सतर्क बनाता है।
मंत्र जप या ओमकार उच्चारण भी मानसिक स्थिरता में सहायक है।
5. घरेलू और त्वरित उपाय
यात्रा के दौरान पुदीना तेल या नीलगिरी तेल की कुछ बूंदें रुमाल पर डालकर सूंधना ताजगी लाता है।
बार-बार ठंडे पानी से चेहरा धोना।
इलायची या लौंग चबाना, जिससे नींद और थकान कम होती है।
तेज संगीत या पॉडकास्ट सुनना भी ध्यान को सतर्क रखता है।

आधुनिक और आयुर्वेद का संतुलन

हाईवे हिप्नोसिस केवल भारत ही नहीं, पूरी दुनिया में दुर्घटनाओं का कारण बन रहा है। आधुनिक विज्ञान इसके लिए ड्राइविंग ब्रेक्स और अलर्टनेस तकनीक पर जोर देता है, जबकि आयुर्वेद इसके मूल कारण यानी मानसिक थकान और वात असंतुलन को संतुलित करने पर ध्यान देता है। दोनों दृष्टिकोणों का मिलकर उपयोग करने से इस समस्या से सुरक्षित बचा जा सकता है।

संत पलटू दास उन महान आत्माओं में से एक थे, जिन्होंने उन्नीसवीं सदी में अपनी भक्ति और सत्य की साधना से लोगों के हृदय को आलोकित किया। वे एक ऐसे संत थे, जिन्हें 'अभिनव कबीर' कहा गया, क्योंकि उनकी वाणी में सत्य और भक्ति का गहरा रस भरा था। उनकी साधना और उपदेशों ने न केवल उस समय के लोगों को राह दिखाई, बल्कि आज भी उनकी वाणी और रचनाएँ हमें सत्य के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती हैं। इस लेख में हम संत पलटू दास के जीवन, उनकी साधना, उनके उपदेशों और उनकी रचनाओं के बारे में सरल और भक्ति-भाव से बात करेंगे।

जीवन परिचय: एक साधारण व्यापारी से संत तक

संत पलटू दास का जन्म उन्नीसवीं सदी के दूसरे चरण में उत्तर प्रदेश के फैजाबाद जिले में तमसा नदी के तट पर बसे नगपुर जलालपुर गाँव में हुआ था। वे काँटू वनिया जाति से थे और साधारण व्यापार करके अपनी आजीविका चलाते थे। उनके भाई पलटू प्रसाद, जिन्हें प्रसाद साहब के नाम से जाना जाता है, स्वयं एक संत थे। उन्होंने अपनी 'भजनावली' में पलटू दास के जीवन का कुछ परिचय दिया है। प्रसाद साहब लिखते हैं:

नग जलालपुर जनम भयो है, वसे अवध के खोर।

कहै पलटू प्रसाद हो, भयो जक्त में सोर।

सहर जलालपुर मूड मुड़ाया, अवध तुडा करधनिया।
सहज करै व्यापार घटहि में, पलटू निरगुन विनिया।

पलटू दास जन्म से ही वैरागी स्वभाव के थे। उनका मन सदा सत्संग, संतों के मिलन और भगवद्-भजन में रमता था। नगपुर जलालपुर में गोविंद साहब नाम के एक महान संत रहते थे, जो संत भीखा साहब के शिष्य थे। गोविंद साहब पलटू दास के पुरोहित थे और दोनों एक-दूसरे के सत्संग से बहुत प्रभावित थे। ऐसा कहा जाता है कि गोविंद साहब ने ही पलटू दास को मंत्र-दीक्षा दी थी। बाद में दोनों ने संत जानकीदास से भी दीक्षा ली।

सत्य की खोज में तीर्थयात्रा

संत पलटू दास और गोविंद साहब ने एक बार सत्य के तत्व को जानने के लिए तीर्थयात्रा शुरू की। इस यात्रा में उन्हें संत भीखा साहब का सान्निध्य प्राप्त हुआ, जिन्होंने गोविंद साहब को सत्य का उपदेश दिया और उन्हें अपना शिष्य बनाया। पलटू दास और गोविंद साहब जगन्नाथ पुरी की यात्रा पर निकले थे, क्योंकि पलटू दास की भगवान जगन्नाथ में गहरी आस्था थी। लेकिन रास्ते में ही वे नगपुर जलालपुर लौट आए और वहाँ कठिन वैराग्य और तपस्या में लीन हो गए। इस यात्रा और संत भीखा साहब के सत्संग का पलटू दास पर गहरा प्रभाव पड़ा।

वे समय-समय पर अयोध्या में भी रहते थे, जहाँ वे लोगों को सत्य और भक्ति की बातें सुनाते और नाम-भजन की प्रेरणा देते थे। अयोध्या के कुछ महंतों और साधुओं ने उनके सच्चे उपदेशों का विरोध किया, लेकिन अंत में सत्य की जीत हुई और उन्हें सत्य के सामने नतमस्तक होना पड़ा।

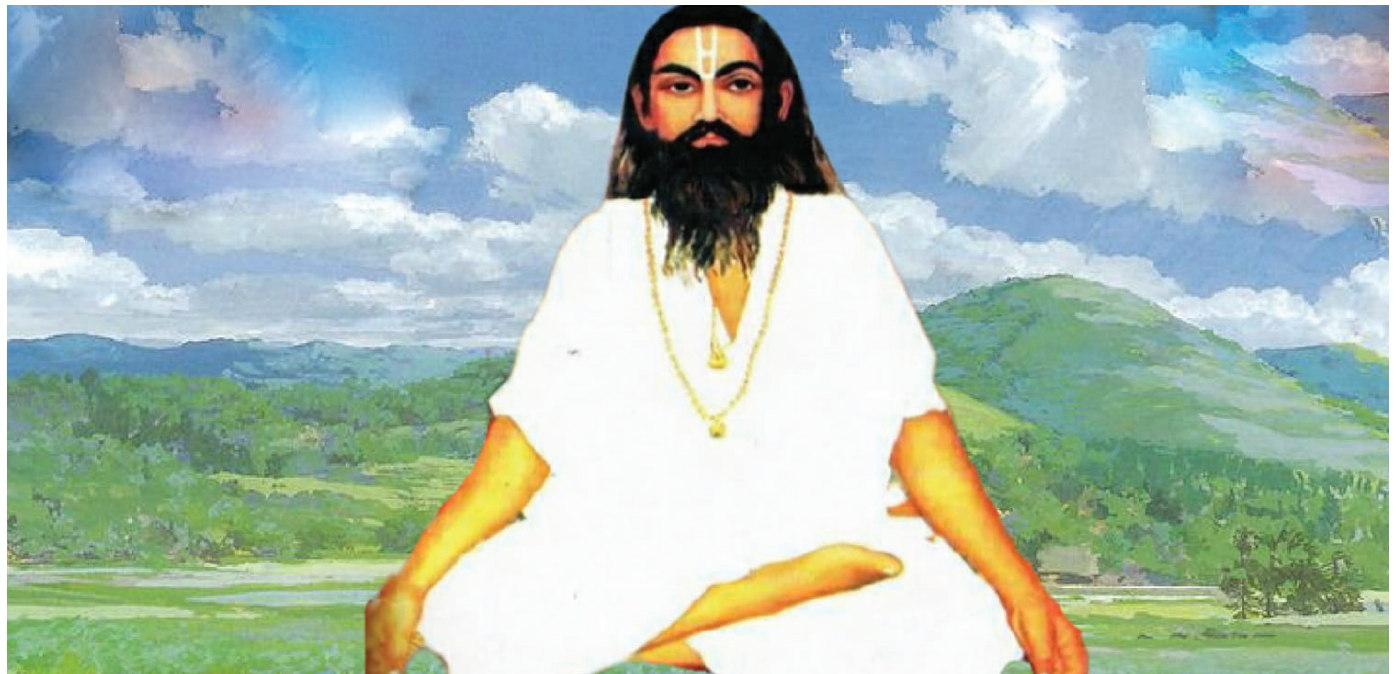
भक्ति और वैराग्य का कठिन मार्ग

संत पलटू दास ने वैराग्य के कठिन मार्ग को अपनाया। उन्होंने कहा कि वैराग्य का रास्ता बहुत कठिन है, लेकिन गुरु की शरण में रहकर ही जीव भवसागर को पार कर सकता है। उनकी वाणी में गुरु की महिमा का बड़ा जोर है। उन्होंने कहा:

पलटू संत जो कहि गए, सोइ वात है ठीक।

वचन संत के नहि टर, ज्यो गाडी की लीक।

संत पलटू दास सत्य और भक्ति का प्रकाश



उनका मानना था कि संसार की आशा बंधन में डालती है। इसलिए जीव को सदा गुरु की शरण में रहना चाहिए। उन्होंने संसार को त्यागकर भगवान के प्रति प्रेम और भक्ति को जीवन का परम लक्ष्य माना। उनकी शिक्षाएँ सिखाती हैं कि संसार का मोह छोड़कर राम की भक्ति में लीन होने से ही मुक्ति संभव है। पलटू दास ने अपने जीवन का अधिकांश समय अयोध्या में बिताया। वहाँ उनका एक भव्य मंदिर और अखाड़ा है, और नगपुर जलालपुर में उनकी कुटी आज भी उनकी स्मृति को संजोए हुए है।

अद्वैत दर्शन: जीव और ब्रह्म की एकता

संत पलटू दास अद्वैतवादी संत थे। उन्होंने घोषणा की कि 'जोई जीव सोई ब्रह्म'। उनके अनुसार, जैसे बीज में फल और फल में बीज होता है, वैसे ही जीव और ब्रह्म एक-दूसरे से अभिन्न हैं। उनकी साधना का आधार जीव और ब्रह्म की एकरूपता था। उन्होंने कहा:

जगत हैंसे तो हैंसन दे, पलटू हैंसे न राम।

लोक लाज कुल छाडि कै, करिलौ अपना काम।

उनका कहना था कि देह धारण करने से जीव परमात्मा का दास बन जाता है, लेकिन वास्तव में वह स्वरूप में सदा एक ही है। उन्होंने भगवद्-भक्ति को जीवन का सबसे बड़ा श्रेय माना और सिखाया कि सत्य की खोज में संसार की हँसी को नजरअंदाज कर देना चाहिए। उनकी वाणी में सत्य का गहरा दर्शन है:

पलटू पारस के छुए लोहा कंचन होय।

हरि को भजै सो वडा है, जाति न पूछे कोय।

उन्होंने कहा कि जैसे जल में लहर उठती है और जल में ही समा जाती है, वैसे ही जीव और ब्रह्म में कोई भेद नहीं। जो इस भेद को मानता है, वह पाप का भागी बनता है।

शब्द और सत्संग की महिमा

संत पलटू दास ने अपनी रचनाओं में शब्द की महिमा

का विशेष बखान किया है। उनके अनुसार, शब्द ही वह शक्ति है, जो जीव को संसार से मुक्त कर राम की प्राप्ति करवाती है। उन्होंने कहा:

जैसे कामिनि के विषय कामी लावै ध्यान।

ऐसी प्रीति अब दीजिये, पलटू को भगवान।

उनका कहना था कि जिस तरह एक प्रेमी अपनी प्रेमिका के प्रति समर्पित रहता है, उसी तरह भक्त को भगवान के प्रति प्रेम करना चाहिए। शब्द की चोट इतनी गहरी होती है कि वह संसार को छुड़ा देती है और मन को परमात्मा में लीन कर देती है।

उन्होंने सत्संग की महत्ता पर भी जोर दिया। उनके अनुसार, बिना सत्संग के हरिनाम का आनंद नहीं मिलता। सत्संग से मोह का नाश होता है, और मोह के नाश से मुक्ति मिलती है। मुक्ति से भक्ति, भक्ति से प्रेम और प्रेम से राम की प्राप्ति होती है। उन्होंने भगवान से सदा सत्संग का वरदान माँगा। उनकी एक रचना में सतनाम की मधुरता का वर्णन इस तरह है:

मीठ बहुत सतनाम है, पियत निकारै जान।

पियत निकारै जान मरै की, करै तयारी।

हरि से वे हैं वडे, पियो जिनि हरि रस जाई।

पलटू मेरे बचन को ले, जिज्ञासू मान।

रचनाएँ: भक्ति और सत्य का खजाना

संत पलटू दास ने अपनी रचनाओं में सत्य और भक्ति का अनमोल खजाना दिया है। उनकी रचनाएँ सरल, प्रांजल और हृदय को छूने वाली हैं। उन्होंने अरिल्ल, छंद, कुंडलिया, और अनगिनत पदों और दोहों की रचना की। उनकी वाणी में सत्य की गहराई और भक्ति का रस है। उनकी रचनाएँ सिखाती हैं कि सत्संग और नाम-जप ही जीवन का सच्चा आधार है।

उनकी रचनाओं में सत्य की शीतलता का वर्णन है। उन्होंने कहा कि सत चंदन और चंद्रमा की तरह शीतल होता है। जो जलता हुआ आता है, उसे सत के मधुर वचन

शांति देते हैं। उनकी वाणी में धैर्य, शील और क्षमा का समन्वय है। उनकी एक उक्ति है:

लोक वेद पलटू नही, कहाँ मैं तबको वात।

चाँद सूरज पानी पवन, नही दिवस नहि रात।

इसमें उन्होंने उस अवस्था का वर्णन किया है, जब सृष्टि की रचना नहीं हुई थी। उनकी रचनाएँ लोगों को सत्य और भक्ति की ओर जागृत करती हैं।

सत्य के लिए बलिदान

संत पलटू दास की प्रसिद्धि से कुछ साधु ईर्ष्या करने लगे। अयोध्या में उनके सच्चे उपदेशों का विरोध हुआ, और अंत में उन्हें जीते-जी जला दिया गया। लेकिन सत्य के साधक कभी हार नहीं मानते। ऐसा कहा जाता है कि जलाए जाने के बाद वे अपने आराध्य भगवान जगन्नाथ की गोद में लीन हो गए। एक दोहा प्रचलित है:

अवध पुरी में जरि मुए, दुष्टन दिया जराइ।

जगन्नाथ की गोद में, पलटू सुते जाइ।

यह दोहा बताता है कि उन्होंने सत्य की राह पर चलते हुए अपने प्राणों का बलिदान दिया, लेकिन अंत में भगवान के चरणों में शाश्वत शांति प्राप्त की।

संत पलटू दास की विरासत

संत पलटू दास की शिक्षाएँ और रचनाएँ आज भी हमें प्रेरित करती हैं। उनकी वाणी में सत्य, भक्ति और वैराग्य का गहरा दर्शन है। उन्होंने सिखाया कि जीवन का सच्चा उद्देश्य भगवान की भक्ति और सत्य की खोज है। उनकी रचनाएँ संत-साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। उनकी कुटी और मंदिर आज भी भक्तों के लिए तीर्थस्थल हैं।

संत पलटू दास की साधना और उपदेश हमें सिखाते हैं कि सत्य का मार्ग कठिन हो सकता है, लेकिन गुरु की शरण और भगवान की भक्ति से हर बाधा को पार किया जा सकता है। उनकी वाणी आज भी हमारे हृदय को सत्य और भक्ति के रस से सराबोर करती है।

वेदों में देवी की रहस्यमयी उपस्थिति

हमें बचपन से देवी दुर्गा की कहानियां सुनाई जाती हैं। नवरात्रि में पूजा, गरबा की धूम, और महिषासुर पर विजय की गाथा। लेकिन अगर हम पीछे मुड़कर देखें, तो वेदों में यह सब कुछ इतना सीधा नहीं लगता। वेद सबसे पुराने ग्रंथ हैं, जो हजारों साल पुराने हैं। यहां देवी का जिक्र है, लेकिन वह एक योद्धा के रूप में नहीं, बल्कि किसी गहरी शक्ति के रूप में। आज हम यह जानेंगे कि देवी क्यों और कैसे प्रकट हुईं, दुर्गा नाम कैसे पड़ा, और महिषासुरमर्दिनी का वैदिक रिकॉर्ड क्या है। हम पुराणों को छोड़कर सिर्फ वेदों पर टिकेंगे। यह सफर हमें सोचने पर मजबूर कर देगा कि हमारी परंपराएं कैसे बदलीं। क्या देवी हमेशा से योद्धा थीं, या समय ने उन्हें नया रूप दिया?

वेदों में देवी कोई नई नहीं हैं। ऋग्वेद, जो लगभग 1500 से 1200 ईसा पूर्व का है, में 'देवी' शब्द मिलता है। यह शब्द 'देव' का स्त्री रूप है, जो मतलब देता है 'स्वर्गीय' या 'दिव्य'। लेकिन यहां देवी एक व्यक्ति नहीं, बल्कि ब्रह्मांड की शक्ति हैं। उदाहरण के लिए, ऋग्वेद के दसवें मंडल में 'देवी सूक्त' है। यह सूक्त (10.125) देवी को रानी के रूप में बयान करता है। वह कहती हैं, 'मैं सब कुछ हूँ। मैंने सारे लोक बनाए। मैं पृथ्वी और आकाश में बसती हूँ।' यह सूक्त देवी को सृष्टि की मूल शक्ति बताता है। वह हर प्राणी के अंदर रहती हैं, जैसे कोई अदृश्य ऊर्जा। विद्वान कहते हैं कि यह वैदिक काल में देवी का पहला रूप है — न तो कोई मूर्ति, न कोई हथियार। बस, एक अनंत चेतना।

फिर भी, सवाल उठता है — क्यों प्रकट हुई देवी? वेदों में इसका जवाब सरल है। वैदिक लोग प्रकृति से डरते थे। बाढ़, सूखा, रोग — ये सब असुरों (राक्षसों) के रूप में दिखते थे। देवी इनसे लड़ने की शक्ति देती थीं। लेकिन यह लड़ाई शारीरिक नहीं, बल्कि आध्यात्मिक थी। जैसे, अथर्ववेद में निरुहति नाम की देवी का जिक्र है, जो विनाश की शक्ति हैं। वह दर्द देती हैं, लेकिन साथ ही रक्षा भी। विद्वानों का मानना है कि वैदिक देवियां बहुआयामी थीं। एक तरफ उषा (सुबह की किरण), दूसरी तरफ रात्रि (रात की शांति)। यह संतुलन दिखाता है कि देवी प्रकृति का हिस्सा हैं, न कि ऊपर से आई कोई अलग ताकत। आज के समय में सोचें, तो यह पर्यावरण संरक्षण जैसा लगता है। देवी प्रकट हुईं क्योंकि मनुष्य को प्रकृति से जुड़ना था, उसे समझना था। नहीं तो, हम खो जाते।

दुर्गा नाम: किले से योद्धा तक का सफर

अब बात करते हैं दुर्गा नाम की। 'दुर्गा' शब्द सुनते ही मन में एक तेजस्वी महिला की तस्वीर आती है, सिंह पर सवार। लेकिन वेदों में यह नाम ऐसा नहीं था। संस्कृत में 'दुर्गा' का मतलब है 'जो पार न हो सके' या 'अजेय'। यह 'दुर्' (कठिन) और 'गम्' (जाना) से बना है। ऋग्वेद में यह शब्द कई जगह आता है — जैसे सूक्त 4.28, 5.34, 8.27, 8.47, 8.93 और 10.127। यहां दुर्गा का मतलब किला है, कोई मजबूत जगह जो दुश्मन न पार सके। अथर्ववेद के 10.1 और 12.4 में भी यही। तो, क्या देवी का नाम एक किले से पड़ा?



विद्वान कहते हैं कि वैदिक काल में दुर्गा एक रूपक था। जैसे, जीवन की मुश्किलें एक किला हैं, जिन्हें पार करना नामुमकिन लगता है। लेकिन देवी वह शक्ति हैं जो इसे तोड़ देती हैं। तैत्तिरीय आरण्यक (यजुर्वेद का हिस्सा) के 10.1.7 में 'दुर्गे' नाम की एक देवता का जिक्र है। यहां वह मुश्किलों से रक्षा करने वाली हैं। लेकिन कोई योद्धा का वर्णन नहीं। यजुर्वेद में अम्बिका नाम की देवी मिलती है। वह पहाड़ों की युद्धप्रिय देवी हैं। कुछ विद्वान कहते हैं कि दुर्गा इसी अम्बिका से निकलीं। अम्बिका शरद ऋतु का प्रतीक हैं, इसलिए दुर्गा पूजा शरद में होती है।

यह नाम कैसे देवी से जुड़ा? सोचिए, वैदिक लोग किलों में रहते थे। दुर्गा किला की रक्षक बनीं। धीरे-धीरे, यह नाम एक देवी को मिल गया। ब्रिटानिका जैसे स्रोत बताते हैं कि ऋग्वेद और अथर्ववेद में दुर्गा का जिक्र है, लेकिन किंवदंतियां बाद की हैं। एक तरफ विद्वान कहते हैं कि दुर्गा वैदिक नहीं, स्थानीय पहाड़ी देवियों से आईं। दूसरी तरफ, कुछ मानते हैं कि देवी सूक्त ने आधार दिया। यह बहस हमें सोचने पर मजबूर करती है — क्या नाम महत्वपूर्ण है, या शक्ति? आज के दौर में, जब महिलाएं हर क्षेत्र में लड़ रही हैं, दुर्गा का यह नाम प्रेरणा देता है।

दुर्गा सूक्त की बात करें। यह महानारायण उपनिषद या तैत्तिरीय आरण्यक से है। यहां दुर्गा अग्नि देवता को संबोधित है। मतलब, 'हे अग्नि, हमें दुर्ग (मुश्किलों) से पार करा।' पांच श्लोक अग्नि पर हैं। तो, यह देवी का सूक्त कम, अग्नि की प्रार्थना ज्यादा लगता है। फिर भी, विद्वान इसे दुर्गा का वैदिक रूप मानते हैं। यह दिखाता है कि वेदों में देवी अलग-अलग रूपों में हैं। कभी अग्नि की ज्वाला, कभी पहाड़ की चट्टान।

महिषासुरमर्दिनी: वैदिक काल में भैंस का राक्षस

महिषासुरमर्दिनी — यह नाम सुनकर उत्साह आता है। दुर्गा का वह रूप जो भैंस के रूप वाले राक्षस महिषासुर को मारती हैं। महिषासुर का जिक्र पुराणों में है, जैसे देवी महात्म्य। वेदों में भैंस का कोई राक्षस नहीं। ऋग्वेद में असुर हैं, जैसे शुष्ण नाम का राक्षस, लेकिन वह भैंस नहीं। विद्वान कहते हैं कि यह नाम बाद का है। 'महिष' मतलब भैंस, 'असुर' मतलब राक्षस। लेकिन वैदिक रिकॉर्ड में दुर्गा का यह रूप नहीं।

तो, कैसे मिला यह नाम? कुछ स्रोत बताते हैं कि वैदिक सभ्यता में हड़प्पा की मुहरों पर एक देवी दिखती है, जो राक्षस को कुचल रही हैं। लेकिन यह ऋग्वेद से पहले का है। विकीबहरत जैसे साइट्स कहते हैं कि दुर्गा-सप्तशती का विचार सिंधु-सरस्वती सभ्यता से आया। लेकिन वेदों में साफ जिक्र नहीं। एक कोण से देखें, तो महिषासुर अज्ञान का प्रतीक हो सकता है। वेदों में असुर तमस (अंधकार) के रूप हैं। दुर्गा उन्हें मर्दिनी (नाश करने वाली) बनीं।

दूसरी तरफ, कुछ विद्वान कहते हैं कि वैदिक काल में पशु बलि थी। भैंस की बलि असुरों से लड़ने का प्रतीक। लेकिन महिषासुर की कहानी नहीं। पहाड़ी इलाकों में भैंस राक्षस का भय था। दुर्गा ने इसे अपनाया। सोचने लायक है — अगर वेदों में नहीं, तो यह नाम इतना लोकप्रिय क्यों? शायद क्योंकि यह महिलाओं की ताकत दिखाता है। एक भैंस जितना मजबूत राक्षस को हराना — यह प्रतीक आज भी प्रासंगिक है।

देवी का प्रकटीकरण: शक्ति की अनंत धाराएं

अब मूल सवाल — देवी क्यों और कैसे प्रकट हुईं? वेदों में प्रकटीकरण कोई चमत्कार नहीं। यह धीमा विकास है। ऋग्वेद में देवियां प्रकृति हैं। पृथ्वी मां, अदिति नैतिक व्यवस्था। वाच (वाणी) देवी हैं, जो ब्रह्मांड को बोलती हैं। देवी सूक्त में वह कहती हैं, 'मैं वह हूँ जो इच्छा से सब बनाती हूँ।' तो, प्रकटीकरण आंतरिक है। मनुष्य की चेतना में। क्यों? क्योंकि वैदिक लोग यज्ञ करते थे। देवी यज्ञ की शक्ति हैं। बिना उनकी, कोई फल नहीं।

कैसे प्रकट हुईं? लेट वैदिक ग्रंथों में, जैसे उपनिषदों में, देवी ज्यादा स्पष्ट हैं। मुंडक उपनिषद (पांचवीं शताब्दी ईसा पूर्व) में काली का जिक्र है — 'भयानक लेकिन तेज विचार वाली।' लेकिन यह दुर्गा जैसी नहीं। विद्वान देवदत्त पट्टनायक कहते हैं कि वैदिक काल में देवी 'शक्ति' थीं, सभी देवताओं के पीछे। ऋग्वेद में श्री देवी सौभाग्य की हैं, कमल और हाथी वाली। कोई हिंसा नहीं। धीरे-धीरे, यह शक्ति योद्धा बनीं। क्यों? शायद राजाओं ने। कुषाण काल (1900 साल पहले) में दुर्गा

किले की रक्षक बनीं। सिंह राजकीय सिंहासन का प्रतीक, हथियार राजकीय शक्ति।

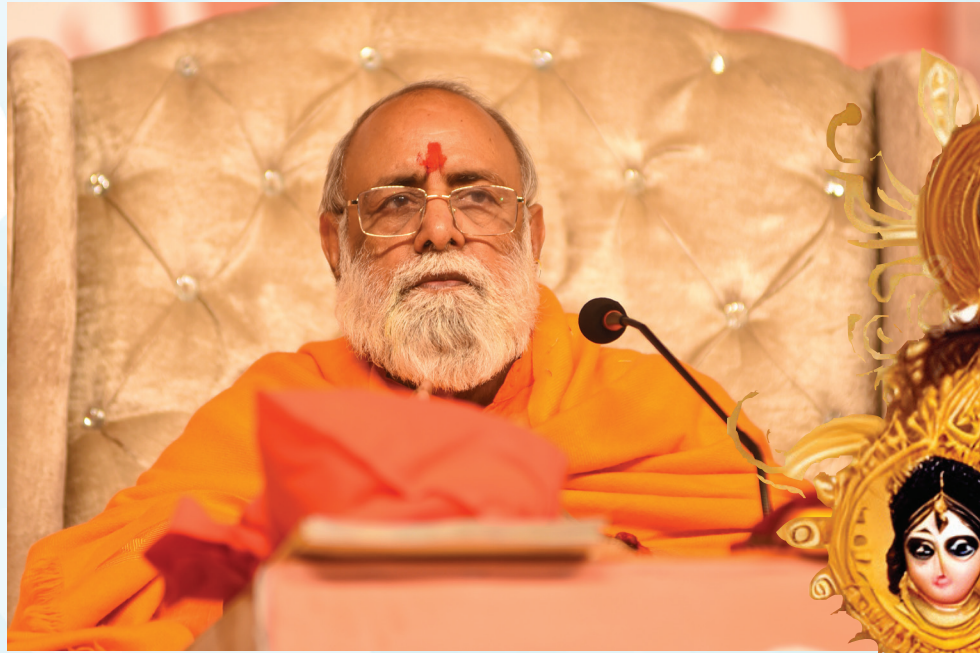
एक संतुलित नजरिए से देखें। कुछ विद्वान कहते हैं देवी वैदिक नहीं, द्रविड़ या आदिवासी परंपराओं से। लेकिन विकिपीडिया जैसे स्रोत बताते हैं कि 'देवी' शब्द वैदिक है। प्रकटीकरण बहुआयामी था। कभी सृष्टि के लिए, कभी रक्षा के लिए। आज सोचें, तो यह लिंग समानता दिखाता है। वेदों में देवता और देवी बराबर। लेकिन समय ने देवी को योद्धा बना दिया। यह बदलाव हमें क्या सिखाता है? कि शक्तियां स्थिर नहीं, वे बदलती हैं।

वैदिक देवी: पुरानी जड़ें, नई प्रेरणा

अंत में, वेदों का रिकॉर्ड हमें चौंकाता है। देवी प्रकट हुईं शक्ति के रूप में, नाम दुर्गा कठिनाइयों से पार करने के लिए पड़ा। महिषासुरमर्दिनी वैदिक नहीं, लेकिन इसका प्रतीक वैदिक असुर-वध से जुड़ता है। एक तरफ, हम देखते हैं कि वेद सरल हैं — देवी प्रकृति हैं। दूसरी तरफ, बाद के बदलावों ने उन्हें जीवंत बनाया।

सोचिए, आज की दुनिया में। जलवायु परिवर्तन, सामाजिक असमानता — ये नए 'असुर' हैं। वैदिक देवी हमें सिखाती हैं कि शक्ति अंदर है। प्रकट होना कोई चमत्कार नहीं, जागृति है। दुर्गा नाम हमें मजबूत बनाता है, भले ही किले का हो। महिषासुरमर्दिनी हमें लड़ना सिखाती है, भले ही कहानी बाद की हो। यह विरासत हमें जोड़ती है — पुरानी जड़ों से, नई चुनौतियों तक। क्या हम इसे समझेंगे? या सिर्फ पूजा करेंगे? यह सवाल हर पाठक के लिए है। वेद हमें यही सोचने को कहते हैं।

सबसे बड़ी मित्र है मां दुर्गा



परम पूज्य सद्गुरुदेव जी ने कहा कि परा का मित्र शरीर है जो कि अपरा है और अपरा नाशवान है। मां दुर्गा का कथन है कि पृथ्वी, आकाश, जल, अग्नि, मन, बुद्धि और अहंकार अपरा प्रकृति है जो नाशवान है और निकृष्ट है। मैं परा हूँ, इससे पार हूँ। अपरा प्रकृति मुझ परा को नहीं जान सकती। जो यह जानता है वह पापों से मुक्त हो जाता है, उस पर कभी संकट नहीं आता। मां दुर्गा ज्ञान है। गीता में वर्णन है कि जब सब सो जाते हैं तब मेरा ज्ञान जागता है, योगी जागते हैं। हमें प्रतिदिन अपने इस मित्र की स्तुति इस प्रकार करनी चाहिए। हे जगदीश्वर! संसार में कौन सा वांगमय ऐसा है, जो तुम्हारी स्तुति नहीं, क्योंकि तुम्हारा शरीर तो सकल शब्दमय है। दे देवि ! अब मेरे मन में संकल्प विकल्पात्मक रूप से उदित होने वाली एवं संसार में दृश्यरूप से सामने आने वाली संपूर्ण आकृतियों में आपके स्वरूप का दर्शन होने लगा है। हे समस्त अमंगल ध्वंसकारिणि कल्याणस्वरूपे शिवे ! इस बात को सोचकर अब बिना किसी प्रयत्न के ही संपूर्ण चराचर जगत में मेरी यह स्थिति हो गई है कि मेरे समय का क्षुद्रतम अंश भी तुम्हारी स्तुति, तप, पूजा अथवा ध्यान से रहित नहीं है। अर्थात् मेरे संपूर्ण जागति आचार-व्यवहार तुम्हारे ही भिन्न-भिन्न रूपों के प्रति यथोचित रूप से व्यवहृत होने के कारण तुम्हारी पूजा के रूप में परिणत हो गये हैं। अर्थात् जो भी दिखाई और सुनाई दे रहा है उसमें तू ही है। जितने भी मंत्र पूजा-पाठ हैं, संकल्प और विकल्प हैं, सबमें तू ही है। अच्छे-बुरे, पाप-पुण्य, अमीर-गरीब सभी में तू ही है। तुझसे बाहर कुछ भी नहीं है। मां ! मैं न मंत्र जानता हूँ, न यंत्र; मुझे स्तुति का ज्ञान नहीं है। न आवाहन का पता है, न ध्यान का। स्तोत्र और कथा की भी जानकारी नहीं है। न तो तुम्हारी मुद्राएं जानता हूँ और न मुझे व्याकुल होकर विलाप करना ही आता है; परंतु एक बात जानता हूँ, केवल तुम्हारा अनुसरण-तुम्हारे पीछे चलना। जो कि सब क्लेशों को, समस्त विपत्तियों को हर लेने वाला है। सबका उद्धार करने वाली माता ! मैं पूजा की विधि नहीं जानता, मेरे पास धन का भी अभाव है, मैं स्वभाव से आलसी हूँ तथा मुझसे ठीक से पूजा करना भी नहीं आता; इन सब कारणों से तुम्हारे चरणों की सेवा में जो त्रुटि हो गई है, उसे क्षमा करना; क्योंकि कुपुत्र का होना संभव है, किंतु कहीं भी कुमाता नहीं होती।

माता अर्पणा ! तुम्हारे मंत्र का एक अक्षर भी कान में पड़ जाए तो उसका फल यह होता है कि मूर्ख चाण्डाल भी मधु पाक के समान मधुर वाणी का उच्चारण करने वाला उत्तम वक्ता हो जाता है, दीन मनुष्य भी करोड़ों स्वर्ण-मुद्राओं से संपन्न हो चिरकाल तक निर्भय विहार करता रहता है। जब मंत्र के एक अक्षर के श्रवण का ऐसा फल है तो जो लोग विधिपूर्वक जप में लगे रहते हैं, उनके जप से प्राप्त होने वाला उत्तम फल कैसा होगा ? इसका कौन मनुष्य जान सकता है।



काशी विद्वत परिषद के वरिष्ठ पदाधिकारियों का उद्बोधन

अज्ञानी मनुष्यों को ज्ञान प्रदान किया इसलिए जगद्गुरु की उपाधि दी गई है

कई साधक साधना करते-करते निर्विकल्प समाधि में चले जाते हैं और मोक्ष को प्राप्त कर लेते हैं किंतु हमारे पूज्य स्वामी जी ने सोचा कि मैं साधना की उस स्थिति में पहुँच गया हूँ जहाँ मेरा कल्याण तो हो ही जाएगा लेकिन जनता का कल्याण कौन करेगा। इसलिए ही इन्हें जगद्गुरु की उपाधि मिली है। गुरु उसे कहते हैं जो अंधकार से प्रकाश की तरफ ले जाए। स्वामी जी ने अपने देश ही नहीं विदेशों में अज्ञानी मनुष्यों को ज्ञान प्रदान किया है इसलिए इन्हें जगद्गुरु की उपाधि दी गई है। स्वामी जी जैसे महापुरुष को किसी उपाधि की आवश्यकता नहीं होती लेकिन फिर भी सज्जनों, विद्वानों और पंडितों का कर्तव्य होता है कि ऐसे पुरुष का सम्मान करें। ये समाज का दायित्व होता है कि ऐसा पुरुष समाज के लिए कुछ करता है विद्या, सनातन धर्म, मंदिर, गऊ व संस्कृति के लिए कुछ करता है तो वह सम्मान का पात्र है। संस्कृत, संस्कार, वेद, धर्म की रक्षा करने वाले ही इस संस्कृत दिवस पर सम्मानित होते हैं और वे महापुरुष भगवत अवतार होते हैं और पूजनीय होते हैं। मैं इनका वंदन करता हूँ।

प्रो. राम किशोर त्रिपाठी जी, अध्यक्ष, काशी विद्वत परिषद, काशी

लोगों का अज्ञान दूर कर, दुख दूर करे, वही जगद्गुरु है

इस अभिनंदन कार्यक्रम में जिनका अभिनंदन करने के लिए हम सभी यहां उपस्थित हुए हैं जो लोगों को अज्ञान से ज्ञान को ओर ले जाते हैं, जो लोगों के जीवन में व्यष्टि से समाष्टि की भावना पैदा करते हैं। जो लोगों को जगत से जगदीश्वर की ओर ले जाते हैं ऐसे हम सभी के आदर्शगण, हम सबके श्रेष्ठ महाब्रह्मर्षि श्री कुमार स्वामी जी महाराज हैं। काशी एक ऐसी भूमि है जो धरती से ऊपर है क्योंकि ये भगवान शिव के त्रिशूल में बसी हुई है। इसलिए जो लोग यहां पधारे हैं वे काशी के विद्वान, जो धरती पर नहीं, भगवान शिव के त्रिशूल में विराजमान रहने वाले लोग हैं

आज का दिवस संस्कृत दिवस है। रक्षाबंधन का पर्व है, श्रवण की पूर्णिमा तो आज पूरे देश में, पूरे विश्व में है, लोग संस्कृत दिवस मना रहे हैं। आज अत्यंत पावन दिवस है कि जो स्वामी जी को जगद्गुरु की उपाधि दी गई थी उसका काशी के विद्वान समर्थन करने आए हैं। सचमुच जो जगद्गुरु की सार्थक संज्ञा है वह स्वामी जी पर ही घटित होती है। जो संपूर्ण जगत में जाकर लोगों का मार्गदर्शन करे, संपूर्ण जगत में जाकर लोगों का अज्ञान दूर कर, दुख दूर करे, यही जगद्गुरु है। स्वामी जी संपूर्ण जगत में जाकर लोगों का जीवन मंगलमय कर रहे हैं। ऐसी सामर्थ्य किसी महाब्रह्मर्षि में ही हो सकती है। यह भारत भूमि की धरती धन्य है जहां आप पैदा हुए जिसमें देवता भी आने के लिए तरसते हैं।

प्रो. शिव शंकर मिश्र जी, अध्यक्ष, काशी विद्वत परिषद, दिल्ली कुलपति, पाणिनि संस्कृत विश्वविद्यालय, उज्जैन

जिससे जगत का कल्याण होता है वही जगद्गुरु है

गुरुणा सनातन धर्म का पालन करने के लिए आज हम जिन महापुरुष का अभिनंदन करने के लिए उपस्थित हुए हैं, उन्हें कितनी ही उपाधि दी जाए वह कम है। इनका हृदय उदार है, व्यक्तित्व व सोच बड़ी व्यापक है। ये कहीं किसी वर्ग में सीमित नहीं हैं। ये दुखी प्राणी मात्र के उपकार के प्रति महाराजश्री का एक प्रभाव है। ऐसे महापुरुष को प्रणाम है। आज काशी विद्वत परिषद के अध्यक्ष के रूप में विद्यमान प्रो. राम किशोर त्रिपाठी जी भी यहां आए हैं। आपने आज भगवान शंकर का अभिषेक करने का शुभ कार्य किया है। आपके शुभ कर्म का देश-विदेश में प्रसार हुआ है। अतः आपको 'जगद्गुरु' कहने में कोई आपत्ति नहीं है। जिससे जगत का कल्याण होता है वही जगद्गुरु है।

प्रो. राम नारायण द्विवेदी जी, महामंत्री, काशी विद्वत परिषद, काशी

बिहार की राजनीति में डिग्री विवाद पर घमासान उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने कहा – “आरोपों का जवाब कई बार दे चुका हूँ”

@ मनीष पांडेय

बिहार की राजनीति में इन दिनों सबसे बड़ी चर्चा सत्ता और विपक्ष के टकराव की नहीं, बल्कि डिग्री विवाद की है। जन सुराज अभियान के प्रमुख प्रशांत किशोर (पीके) ने उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी पर गंभीर सवाल खड़े किए हैं। जवाब में सम्राट चौधरी ने भी पलटवार किया है और अपने पुराने अनुभवों का हवाला देकर कहा कि “मैं पहले भी ऐसे आरोपों का सामना कर चुका हूँ, और हर बार सच सामने आया है।”

लालू यादव का पुराना किस्सा सुनाया

पत्रकारों से बातचीत में सम्राट चौधरी ने अपने ऊपर लगे आरोपों को नकारते हुए 1995 की घटना का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि “उस समय लालू यादव ने हिंसा के आरोप में मेरे परिवार के 22 लोगों को जेल भेज दिया था। लेकिन बाद में लालू यादव ने खुद माफी मांगी। राजनीति में आरोप-प्रत्यारोप का खेल नया नहीं है।” उनका यह बयान साफ़ तौर पर इस ओर इशारा करता है कि वे खुद को “राजनीतिक साजिशों के शिकार” के रूप में पेश करना चाहते हैं।

प्रशांत किशोर का सीधा वार

डिग्री विवाद को हवा देने का काम जन सुराज के नेता प्रशांत किशोर ने किया। पटना में आयोजित एक सभा में पीके ने कहा कि सम्राट चौधरी ने “जनता और अदालत दोनों को गुमराह किया है।” पीके का दावा है कि सुप्रीम कोर्ट में दाखिल एक दस्तावेज बताता है कि सम्राट चौधरी, जिनका पूरा नाम सम्राट कुमार मौर्य है, को मैट्रिक परीक्षा में मात्र 234 अंक मिले थे। उस समय पास होने के लिए इससे अधिक अंक जरूरी थे, यानी वे फेल हो गए। यही नहीं, पीके ने यह भी आरोप लगाया कि 2010 में जब सम्राट चौधरी ने चुनावी हलफनामा दाखिल किया, तो उसमें उन्होंने खुद को सिर्फ सातवीं पास बताया। अब सवाल उठता है कि अगर 2010 तक मैट्रिक पास नहीं किया, तो उसके बाद कब और कैसे उन्होंने डी.लिट. की उपाधि हासिल कर ली?

जनता के सामने सवाल

यह विवाद अचानक इसलिए भी तूल पकड़ गया क्योंकि यह केवल डिग्री की बात नहीं, बल्कि राजनीतिक विश्वसनीयता से जुड़ा है। बिहार की जनता पहले ही जातीय समीकरणों, भ्रष्टाचार के आरोपों और शिक्षा व्यवस्था की बदहाली से जूझ रही है। अब जब राज्य का उपमुख्यमंत्री ही डिग्री विवाद में घिरा हो, तो सवाल उठना स्वाभाविक है। विशेषज्ञों का मानना है कि इस विवाद से बिहार की राजनीति में दो बड़े संदेश जा रहे हैं, विपक्ष हर उस मुद्दे को धुनाने की कोशिश करेगा जिससे सत्ताधारी दल की छवि को चोट पहुंचे। जनता शिक्षा और पारदर्शिता को लेकर नेताओं से अधिक ईमानदारी की उम्मीद करती है।

सम्राट चौधरी का पलटवार

प्रशांत किशोर के आरोपों के बाद सम्राट चौधरी ने



कहा, “मैं कई बार साफ़ कर चुका हूँ। ये वही लोग हैं जो हमेशा भ्रम फैलाते हैं। मेरा राजनीतिक और पारिवारिक जीवन सबके सामने है।” उन्होंने आगे कांग्रेस और विपक्षी दलों पर भी निशाना साधा। कांग्रेस वर्किंग कमेटी की बैठक को आड़े हाथों लेते हुए उन्होंने कहा कि “कांग्रेस ने 55 साल तक भारत को लूटा। आज राहुल गांधी वोट अधिकार यात्रा की बात करते हैं, लेकिन जनता सब जानती है।”

धन्यवाद सरकार कार्यक्रम में बयान

यह विवाद ऐसे समय सामने आया जब उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी पटना के रवींद्र भवन में आयोजित “धन्यवाद सरकार” कार्यक्रम में शामिल हुए। यह कार्यक्रम बिहार पार्षद अधिकार महासंघ की ओर से आयोजित था। यहाँ मंच से उन्होंने नगर निकायों के प्रतिनिधियों के अधिकार और सम्मान की बात की। उनका कहना था कि “सरकार लगातार काम कर रही है ताकि स्थानीय निकायों के जनप्रतिनिधियों को वही अधिकार मिले जिसके वे हकदार हैं।” राजनीतिक पंडित मानते हैं कि चौधरी इस कार्यक्रम के जरिए एक तरफ जनता तक संदेश देना चाहते थे कि वे



राजनीति का पुराना हथियार

भारत की राजनीति में डिग्री विवाद कोई नया मामला नहीं है। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल और पीएम नरेंद्र मोदी की डिग्री को लेकर भी विपक्ष ने सवाल उठाए थे। कई राज्यों में विधायकों और मंत्रियों की शैक्षणिक योग्यता को लेकर बहस होती रही है। असल सवाल यह नहीं कि किसके पास कौन-सी डिग्री है, बल्कि यह है कि नेता जनता को सच्चाई बताते हैं या नहीं।

जनता का नजरिया

बिहार जैसे राज्य में जहां शिक्षा व्यवस्था अक्सर सुखियों में रहती है। कभी टॉपर घोटाले के लिए, कभी इंटर कॉपीयों की गड़बड़ी के लिए—वहाँ नेताओं की डिग्री पर सवाल और भी संवेदनशील हो जाता है। पटना विश्वविद्यालय के एक छात्र ने कहा, “अगर उपमुख्यमंत्री खुद अपनी पढ़ाई के बारे में पारदर्शी नहीं हैं, तो हम आम छात्रों को कौन गंभीरता से लेगा?”

आगे की राजनीति

यह विवाद आने वाले दिनों में और गहराएगा। विपक्ष इसे हाथ से जाने नहीं देगा और सत्ताधारी दल इसे “ध्यान भटकाने की कोशिश” बताकर खारिज करता रहेगा। प्रशांत किशोर के लिए यह मौका है अपनी एंटी-एस्टैब्लिशमेंट छवि मजबूत करने का। वहीं, सम्राट चौधरी के लिए यह चुनौती है कि वे अपने राजनीतिक कद को बचाते हुए जनता के बीच भरोसा कायम रखें। बिहार की राजनीति में डिग्री विवाद अब केवल आरोप-प्रत्यारोप का मामला नहीं, बल्कि विश्वसनीयता की जंग बन चुका है।

“विकास और अधिकार” की राजनीति करते हैं, वहीं दूसरी ओर डिग्री विवाद पर ध्यान बंटाना भी उनकी रणनीति हो सकती है।

प्रशांत किशोर बनाम सम्राट चौधरी

बिहार की राजनीति में प्रशांत किशोर भले ही चुनाव नहीं लड़ते, लेकिन उनकी बयानबाजी और जन सुराज अभियान को लेकर चर्चा रहती है। वे नेताओं के “झूठे दावों” को बेनकाब करने का दावा करते हैं। दूसरी तरफ, सम्राट चौधरी बीजेपी के बड़े चेहरे हैं और डिप्टी सीएम की कुर्सी पर बैठे हैं। ऐसे में पीके का हमला केवल व्यक्ति पर नहीं, बल्कि पूरे सत्ता पक्ष की साख पर सवाल उठाता है।

ट्रंप का नया धमाका: एच-1बी वीजा पर 1,00,000 डॉलर की फीस क्यों लगी?

सिसितंबर 2025 का ये महीना अमेरिकी इमिग्रेशन की दुनिया में हलचल मचा रहा है। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने 19 सितंबर को एक एक्जीक्यूटिव ऑर्डर साइन किया, जिसमें एच-1बी वीजा के नए आवेदनों के लिए 1,00,000 डॉलर की फीस लगाने का ऐलान किया गया। ये फीस सालाना होगी, यानी हर साल कंपनियों को इतना पैसा चुकाना पड़ेगा अगर वे विदेशी कुशल कामगारों को लाना चाहें। सोचिए, एक आम कंपनी के लिए ये कितना भारी पड़ सकता है। लेकिन ट्रंप का कहना है कि ये अमेरिकी नौकरियों को बचाने का तरीका है। ये खबर आते ही टेक इंडस्ट्री में हड़बड़ी मच गई। लोग सोच रहे हैं कि क्या अब भारत और चीन जैसे देशों से आने वाले इंजीनियरों का सफर मुश्किल हो जाएगा? ये फैसला सिर्फ फीस की बात नहीं, बल्कि अमेरिका की इमिग्रेशन पॉलिसी में बड़ा बदलाव है। हम इस आर्टिकल में इसकी पूरी कहानी समझेंगे, बिना किसी ड्रामे के, बस साफ-साफ तथ्यों के साथ। चलिए, पहले देखते हैं कि ये सब कैसे शुरू हुआ।



एच-1बी की दुनिया: ट्रंप का पुराना गुस्सा और नया प्लान

एच-1बी वीजा क्या है, ये तो आपने सुना ही होगा। ये अमेरिका का वो वीजा है जो कंपनियों को विदेश से कुशल कामगार लाने की इजाजत देता है, जैसे सॉफ्टवेयर इंजीनियर या डॉक्टर। हर साल करीब 85,000 ऐसे वीजा निकलते हैं, लेकिन आवेदन लाखों में होते हैं। इसलिए लॉटरी सिस्टम चलता है, जहां किस्मत आजमानी पड़ती है। पहले की फीस? बस 460 से 2,500 डॉलर तक, और न्यूनतम सैलरी 60,000 डॉलर। लेकिन ट्रंप को ये पसंद नहीं आया। उनके पहले टर्म में, 2017 से 2021 तक, उन्होंने एच-1बी पर सख्ती की। वीजा रिजेक्ट रेट बढ़ा, और कंपनियों को साबित करना पड़ा कि वे अमेरिकी कामगार नहीं ढूँढ पाए। ट्रंप कहते थे, “ये वीजा अमेरिकियों की नौकरियां चुरा रहे हैं।” अब, 2025 में वापसी के बाद, उन्होंने और सख्त कदम उठाया।

19 सितंबर को ओवल ऑफिस में कॉमर्स सेक्रेटरी हॉवर्ड लुटनिक के साथ खड़े होकर ट्रंप ने कहा, “बड़ी टेक कंपनियां विदेशियों को सस्ते में ट्रेनिंग दे रही हैं। अब ये बंद। या तो अमेरिकियों को ट्रेन करें, या 1,00,000 डॉलर दें।” ये फीस 21 सितंबर से रात 12:01 बजे से लागू हो गई। व्हाइट हाउस के मुताबिक, ये मौजूदा वीजा होल्डर्स पर नहीं लागेगी। अगर आप पहले से एच-1बी पर हैं और बाहर घूमने गए हैं, तो वापसी पर कोई फीस नहीं। लेकिन नए आवेदन? वो मुश्किल। लुटनिक ने बताया कि ये आंकड़ा कंपनियों से बात करके तय किया गया। सोचिए, पहले 60,000 डॉलर सैलरी पर काम करने वाले अब 1,50,000 डॉलर तक की डिमांड कर सकते हैं। ये बदलाव सिर्फ फीस नहीं, बल्कि पूरे सिस्टम को हिला रहा है। क्या ये अमेरिका को मजबूत बनाएगा, या टैलेंट की कमी पैदा करेगा? ये सवाल अभी खुला है।

फीस का झटका: कंपनियां, कामगार और अर्थव्यवस्था पर क्या पड़ेगा असर?

अब आते हैं असल मुद्दे पर। ये 1,00,000 डॉलर की फीस कंपनियों के लिए कितनी भारी है? गूगल, माइक्रोसॉफ्ट जैसी बड़ी टेक फर्म हर साल हजारों एच-1बी यूज करती हैं। एक कंपनी को अगर 100 वीजा चाहिए, तो 1 करोड़ डॉलर का खर्चा। छोटी स्टार्टअप्स? उनके लिए तो ये नामुमकिन। एनपीआर के मुताबिक, ये फीस सालाना चलेगी, यानी हर रिन्यूअल पर। पहले तो लॉटरी में जीतना ही मुश्किल था, अब पैसा भी। कंपनियां कह रही हैं कि इससे इनोवेशन रुकेगा। अमेरिका में टैलेंट शॉर्टेज है, 2025 में ही 3 लाख आईटी जॉब्स खाली हैं। अगर विदेशी कामगार न आए, तो प्रोजेक्ट्स लेट हो जाएंगे।

कामगारों का क्या? ज्यादातर भारत और चीन से आते हैं। एनबीसी न्यूज ने बताया कि 20 सितंबर को एयरपोर्ट्स पर हड़बड़ी मची। लोग सोच रहे थे कि क्या वापसी पर फीस लगेगी। व्हाइट हाउस ने क्लैरिफाई किया, लेकिन घबराहट बनी रही। एक इंडियन इंजीनियर ने कहा, “मैंने 5 साल की मेहनत की, अब ये?” परिवारों पर असर पड़ेगा। बच्चे स्कूल छोड़ सकते हैं, पत्नी जॉब खो सकती है। अल जजोरा ने भारत सरकार का बयान छापा, कि ये “ह्यूमैनिटेरियन कांसिक्वेंस” पैदा करेगा। लेकिन ट्रंप समर्थक कहते हैं, ये अच्छा है। अमेरिकी युवाओं को मौका मिलेगा। सैलरी बढ़ेगी, क्योंकि कंपनियां अब सस्ते लेबर पर निर्भर नहीं रहेंगी। इकोनॉमी पर? सीबीएस न्यूज के अनुसार, ये फीस से सरकार को रेवेन्यू मिलेगा, जो बॉर्डर वॉल या आईसीई एजेंट्स के लिए यूज होगा। लेकिन क्या ये लॉन्ग टर्म में ग्रोथ रोकेगा? रॉयटर्स ने चेतावनी दी कि टेक इंडस्ट्री को झटका लगेगा। कंपनियां कनाडा या यूरोप शिफ्ट कर

सकती हैं। कुल मिलाकर, ये फैसला एक तरफ जॉब प्रोटेक्शन देता है, दूसरी तरफ ग्लोबल टैलेंट को दूर भगाता है। संतुलन कहां?

प्रतिक्रियाओं की बाढ़: कौन खुश, कौन गुस्से में?

ट्रंप का ये कदम आया, तो सोशल मीडिया पर बहस छिड़ गई। टेक लीडर्स ने विरोध जताया। एप्पल के सीईओ टिम कुक ने कहा, “टैलेंट इमिग्रेशन अमेरिका की स्ट्रेंथ है।” गूगल ने एम्प्लॉयी को मैसेज भेजा कि मौजूदा वीजा सेफ हैं। लेकिन ट्रंप ने जवाब दिया, “टेक इंडस्ट्री विरोध नहीं करेगी, क्योंकि वे जानते हैं ये सही है।” कॉमर्स सेक्रेटरी लुटनिक ने प्रेस कॉल में कहा, “ट्रेनिंग अब अमेरिकियों की होगी।” रिपब्लिकन सांसद खुश हैं, कहते हैं ये “अमेरिका फर्स्ट” पॉलिसी है। डेमोक्रेट्स? वे कोर्ट में चैलेंज करने की बात कर रहे। अमेरिकन इमिग्रेशन काउंसिल के पॉलिसी डायरेक्टर आरोन रेचलिन-मेलनिक ने सीएनबीसी को बताया कि ये फीस लीगल हो सकती है या नहीं, ये देखना बाकी है।

भारत में? मिनिस्ट्री ऑफ एक्सटर्नल अफेयर्स ने कहा, “हम स्टडी कर रहे हैं, इंडस्ट्री से बात हो रही।” नास्कॉम ने चिंता जताई कि 4 लाख इंडियन प्रोफेशनल्स प्रभावित हो सकते हैं। चीन से भी आवाजें आईं। लेकिन कुछ लोग समर्थन में हैं। लेबर यूनियंस कहते हैं, ये वेज फ्लोर बढ़ाएगा। न्यूयॉर्क टाइम्स ने एनालिसिस किया कि पहले टर्म में ट्रंप के रूल्स से 50% वीजा कम हुए थे। अब ये फीस उसी दिशा में। सोचिए, क्या ये पॉलिसी वोटर्स को खुश करेगी? 2026 मिडटर्म्स में असर दिखेगा। कुल मिलाकर, ये बहस दो तरफा है। एक तरफ जॉब सिक्योरिटी, दूसरी तरफ ओपन इमिग्रेशन। कौन सही, ये समय बताएगा।

आगे की राह: ये फीस कहां ले जाएगी अमेरिका को?

अंत में, सवाल ये है कि ये फैसला कितना चलेगा? व्हाइट हाउस ने कहा, ये एक साल के लिए है, लेकिन एक्सटेंड हो सकता है अगर “यूएस इंटेरेस्ट” में हो। ट्रंप ने साथ ही “गोल्ड कार्ड” का ऐलान किया, जहां 5 मिलियन डॉलर इन्वेस्टमेंट पर वीजा मिलेगा। ये अमीरों के लिए, लेकिन एच-1बी वाले आम प्रोफेशनल्स के लिए नहीं। क्या कांग्रेस इसे पास करेगी? अभी तो एक्जीक्यूटिव ऑर्डर से चल रहा। पॉलिटिको ने बताया कि ये बड़े इमिग्रेशन बिल का हिस्सा है, जहां असाइलम फीस भी बढ़ी।

भविष्य में? अगर फीस बनी रही, तो कंपनियां ऑटोमेशन पर ज्यादा खर्च करेंगी। या फिर वीजा प्रोसेस चेंज होगा, जैसे हाईएस्ट बिडर सिस्टम। न्यूजवीक ने लिखा कि सीनेटर बिल का प्रपोजल था, जहां वेज फ्लोर 1,50,000 डॉलर हो। ट्रंप ने कहा, “ये ट्रेनिंग को अमेरिकन बनाएगा।” लेकिन क्रिटिक्स कहते हैं, अमेरिका में स्किल्ड वर्कर्स की कमी है। 2025 की रिपोर्ट्स में 7 लाख जॉब्स खाली। अगर विदेशी न आए, तो जीडीपी पर असर पड़ेगा। भारत जैसे देशों में बैकलॉग बढ़ेगा, लोग कनाडा की तरफ रुख करेंगे।

तो, ये फीस एक विचारोत्तेजक कदम है। ये अमेरिका को “अमेरिका फर्स्ट” बनाती है, लेकिन क्या ये ग्लोबल लीडरशिप को कमजोर करेगी? सोचिए, अगर टैलेंट बाहर चला गया, तो इनोवेशन कौन करेगा? या फिर ये मजबूत लोकल वर्कफोर्स बनाएगा? समय ही जवाब देगा। लेकिन एक बात साफ है — इमिग्रेशन कभी आसान नहीं रहा, और ये फैसला उस बहस को नई जिंदगी दे रहा है। अगर आप एच-1बी पर हैं या प्लान कर रहे हैं, तो अपडेट्स फॉलो करें। ये बदलाव सिर्फ न्यूज नहीं, लाखों जिंदगियों का सवाल है।

भारत को नज़रअंदाज़ कर हार जाएगा पश्चिम फिनलैंड राष्ट्रपति का संदेश



@ आनंद मीणा

फिनलैंड के राष्ट्रपति अलेक्जेंडर स्टब ने एक बार फिर अंतरराष्ट्रीय मंच से भारत की बढ़ती ताकत और अहमियत पर जोर दिया है। हेलसिंकी सिक्योरिटी फोरम 2025 में बोलते हुए उन्होंने साफ कहा कि भारत अब उभरती हुई महाशक्ति है और उसे रूस या चीन की तरह नहीं देखा जा सकता। स्टब का यह बयान उस समय आया है जब वैश्विक राजनीति में भारत की भूमिका पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। चाहे बात रूस-यूक्रेन जंग की हो, इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में रणनीतिक संतुलन की हो या फिर पश्चिम और ग्लोबल साउथ के बीच पुल की भारत आज केंद्र में खड़ा है।

भारत को अलग दर्जा देने की अपील

फिनलैंड के राष्ट्रपति ने पश्चिमी देशों से कहा कि उन्हें भारत के साथ संबंध और गहरे करने होंगे। उनके शब्दों में, “भारत का भू-राजनैतिक हित यूक्रेन संघर्ष में भी है। हमें उन्हें शांति प्रयासों में शामिल करना ही होगा। बिना भारत के कोई स्थायी समाधान संभव नहीं।” स्टब का यह कथन इस मायने में खास है कि यूरोप अब समझने लगा है कि एशिया की राजनीति में भारत की स्थिति चीन से बिल्कुल अलग है। जहां चीन को पश्चिम एक चुनौती और प्रतिद्वंद्वी मानता है, वहीं भारत को एक सहयोगी और संभावित साझेदार के रूप में देखा जा रहा है।

यूक्रेन युद्ध में भारत की भूमिका क्यों अहम?

रूस-यूक्रेन युद्ध को चार साल से अधिक हो चुके हैं

और इसका असर पूरी दुनिया महसूस कर रही है। ऊर्जा संकट, महंगाई, यूरोप की सुरक्षा और अमेरिका की विदेश नीति सब पर इसका बोझ है। स्टब ने अपने संबोधन में कहा कि यूक्रेन में शांति की शुरुआत युद्धविराम (सीजफायर) से होनी चाहिए। इसके बाद रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन और यूक्रेन के राष्ट्रपति व्लादिमीर जेलेंस्की की बैठक कराना आवश्यक होगा। उन्होंने साफ किया कि रूस पर आर्थिक प्रतिबंध बनाए रखने होंगे और साथ ही यूक्रेन को सैन्य मदद भी जारी रहनी चाहिए। लेकिन इसके समानांतर, भारत जैसे देशों की मदद से बातचीत की जमीन तैयार करनी होगी। विशेषज्ञों का मानना है कि भारत की रूस और पश्चिम दोनों पक्षों से बात करने की क्षमता ही उसे इस संघर्ष में अद्वितीय भूमिका देती है।

मोदी से हुई बातचीत का जिक्र

स्टब ने अपने भाषण में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से हुई बातचीत का भी उल्लेख किया। उन्होंने कहा, “मैंने पीएम मोदी से यूक्रेन के हालात पर बात की है। भारत को इसमें दिलचस्पी है और हमें उन्हें शांति प्रक्रिया का हिस्सा बनाना चाहिए।” यह बयान ऐसे समय आया है जब भारत लगातार ‘संवाद और कूटनीति’ पर जोर देता रहा है। भारत ने न तो रूस का खुला समर्थन किया है, न ही पश्चिमी ब्लॉक में पूरी तरह शामिल हुआ है। यही “स्ट्रैटेजिक ऑटोनॉमी” भारत की पहचान बन चुकी है।

ट्रम्प से गहरी दोस्ती और उसका असर

स्टब के बयानों का महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है क्योंकि उन्हें अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प का करीबी

माना जाता है। मार्च 2025 में फ्लोरिडा के मार-ए-लागो रिसॉर्ट में दोनों ने सात घंटे लंबा गोल्फ राउंड खेला था। इसके बाद से दोनों के रिश्ते और मजबूत हुए हैं। कुछ रिपोर्ट्स कहती हैं कि ट्रम्प उन चुनिंदा यूरोपीय नेताओं में स्टब की राय को महत्व देते हैं। यानी स्टब का दृष्टिकोण केवल हेलसिंकी तक सीमित नहीं, बल्कि वाशिंगटन की नीतियों पर भी असर डाल सकता है। यूरोप में अक्सर यह कहा जाता है कि छोटे देशों के नेता अंतरराष्ट्रीय राजनीति में हाशिये पर रह जाते हैं। लेकिन स्टब इस धारणा को तोड़ते दिख रहे हैं। विशेषज्ञ कहते हैं कि उनकी कद्र और ट्रम्प तक सीधी पहुंच उन्हें असाधारण शक्ति देती है।

भारत के साथ व्यवहार बदलना होगा

स्टब का भारत प्रेम कोई नया नहीं है। उन्होंने हाल ही में कहा था कि पश्चिमी देशों को भारत के साथ व्यवहार बदलना होगा। “भारत के साथ विदेश नीति में अधिक सम्मान और सहयोग दिखाना होगा। अगर ऐसा नहीं हुआ तो अमेरिका इस खेल में हार जाएगा।” यह बयान इस बात की ओर इशारा करता है कि यूरोप और अमेरिका दोनों को भारत की बढ़ती ताकत का एहसास हो चुका है।

एससीओ समिट का जिक्र

स्टब ने अपने भाषण में चीन के तियानजिन में हुए शंघाई सहयोग संगठन (SCO) समिट का भी जिक्र किया। उस बैठक में प्रधानमंत्री मोदी ने हिस्सा लिया था। स्टब ने कहा, SCO समिट ने पश्चिमी देशों को याद दिला दिया है कि दांव पर क्या-क्या लगा है। भारत जैसे देश इस समय वैश्विक शक्ति संतुलन में निर्णायक

भूमिका निभा रहे हैं।

क्यों बदल रहा है नरेटिव?

पश्चिमी जगत लंबे समय तक भारत को केवल “ग्लोबल साउथ” के हिस्से के रूप में देखता रहा। लेकिन अब तस्वीर बदल रही है।

आर्थिक ताकत: भारत दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था है।

जनसंख्या और बाज़ार: सबसे बड़ा लोकतंत्र और विशाल उपभोक्ता शक्ति।

भू-राजनैतिक स्थिति: एशिया में चीन के बराबर संतुलन बनाने वाला देश।

राजनयिक संतुलन: रूस और पश्चिम दोनों के साथ संवाद की क्षमता।

इन कारणों से भारत को अब “अनदेखा करना” संभव नहीं।

भारत की चुनौती और अवसर

भारत के लिए यह समय सुनहरा अवसर भी है और कठिन परीक्षा भी। अवसर इसलिए क्योंकि पश्चिम खुद भारत को सहयोगी बनाना चाहता है। चुनौती इसलिए क्योंकि रूस के साथ गहरे रिश्तों के बीच संतुलन साधना आसान नहीं होगा। यदि भारत शांति प्रक्रिया में ठोस भूमिका निभाता है तो न केवल उसकी अंतरराष्ट्रीय छवि मजबूत होगी, बल्कि एशिया की राजनीति में उसकी स्थिति और भी ऊँची हो जाएगी। फिनलैंड के राष्ट्रपति अलेक्जेंडर स्टब का बयान सिर्फ कूटनीतिक शिष्टाचार नहीं, बल्कि वैश्विक राजनीति में भारत की अहमियत का प्रमाण है।

हठ कर बैठा चांद एक दिन, माता से यह बोला

हठ कर बैठा चांद एक दिन, माता से यह बोला
सिलवा दो माँ मुझे ऊन का मोटा एक झिंगोला
सन-सन चलती हवा रात भर जाड़े से मरता हूँ
ठिठुर-ठिठुर कर किसी तरह यात्रा पूरी करता हूँ।

आसमान का सफर और यह मौसम है जाड़े का
न हो अगर तो ला दो कुर्ता ही को भाड़े का

बच्चे की सुन बात, कहा माता ने 'अरे सलोने'
कुशल करे भगवान, लगे मत तुझको जादू टोने।

जाड़े की तो बात ठीक है, पर मैं तो डरती हूँ
एक नाप में कभी नहीं तुझको देखा करती हूँ
कभी एक अंगुल भर चौड़ा, कभी एक फुट मोटा
बड़ा किसी दिन हो जाता है, और किसी दिन छोटा।

घटता-बढ़ता रोज, किसी दिन ऐसा भी करता है
नहीं किसी की भी आँखों को दिखलाई पड़ता है
अब तू ही ये बता, नाप तेरी किस रोज लिवायें
सी दे एक झिंगोला जो हर रोज बदन में आये !

हिमालय

मेरे नगपति! मेरे विशाल!
साकार, दिव्य, गौरव विराट्,

पौरुष के पुंजीभूत ज्वाल!
मेरी जननी के हिम-किरीट!

मेरे भारत के दिव्य भाल!
मेरे नगपति! मेरे विशाल!

युग-युग अजेय, निर्बंध, मुक्त,
युग-युग गर्वोन्नत, नित महान्,

निस्सीम व्योम में तान रहा
युग से किस महिमा का वितान?

कैसी अखंड यह धिर-समाधि?
यतिवर! कैसा यह अमर ध्यान?

तू महाशून्य में खोज रहा
किस जटिल समस्या का निदान?

उलझन का कैसा विषम जाल?
मेरे नगपति! मेरे विशाल!

ओ, मौन, तपस्या-लीन यती!
पल भर को तो कर दृगुन्मेष!

रे ज्वालाओं से दग्ध, विकल
है तड़प रहा पद पर स्वदेश।

सुखसिंधु, पंचनद, ब्रह्मपुत्र,
गंगा, यमुना की अभिय-धार

जिस पुण्यभूमि की ओर बही
तेरी विगलित करुणा उदार,

जिसके द्वारों पर खड़ा कांत
सीमापति! तूने की पुकार,

'पद-दलित इसे करना पीछे
पहले ले मेरा सिर उतार।'

उस पुण्य भूमि पर आज तपी!
रे, आन पड़ा संकट कराल,

व्याकुल तेरे सुत तड़प रहे
डूँस रहे चतुर्दिक विविध व्याल।

मेरे नगपति! मेरे विशाल!
कितनी मणियाँ लुट गयीं? मिटा

कितना मेरा वैभव अशेष!
तू ध्यान-मग्न ही रहा; इधर

वीरान हुआ प्यारा स्वदेश।
किन द्रौपदियों के बाल खुले?

किन-किन कलियों का अंत हुआ?
कर हृदय खोल चित्तौर! यहाँ

कितने दिन ज्वाल-वसंत हुआ?
पूछे सिकता-कण से हिमपति!

तेरा वह राजस्थान कहाँ?
वन-वन स्वतंत्रता-दीप लिये

फिरनेवाला बलवान कहाँ?
तू पूछ, अवध से, राम कहाँ?

वृंदा! बोलो, घनश्याम कहाँ?
ओ मगध! कहाँ मेरे अशोक?

वह चंद्रगुप्त बलधाम कहाँ ?
पैरों पर ही है पड़ी हुई

मिथिला भिखारिणी सुकुमारी,
तू पूछ, कहाँ इसने खोयीं

अपनी अनंत निधियाँ सारी?
री कपिलवस्तु! कर, बुद्धदेव

के वे मंगल-उपदेश कहाँ?
तिब्बत, इरान, जापान, चीन

तक गये हुए संदेश कहाँ?
वैशाली के भग्नावशेष से

पूछ लिच्छवी-शान कहाँ?
ओ री उदास गंडकी! बता

विद्यापति कवि के गान कहाँ?
तू तरुण देश से पूछ अरे,

गूँजा कैसा यह ध्वंस-राग?
अंबुधि-अंतस्तल-बीच छिपी

यह सुलग रही है कौन आग?
प्राची के प्रांगण-बीच देख,

जल रहा स्वर्ण-युग-अग्निज्वाला
तू सिंहनाद कर जाग तपी!

मेरे नगपति! मेरे विशाल!
रे, रोक युधिष्ठिर को न यहाँ,

जाने दे उनको स्वर्ग धीर,
पर, फिरा हमें गांडीव-गदा,

लौटा दे अर्जुन-भीम वीर।
कर दे शंकर से, आज करें

वे प्रलय-नृत्य फिर एक बार।
सारे भारत में गूँज उठे,

'हर-हर-बम' का फिर महोच्चार।
ले अँगड़ाई, उठ, हिले धरा,

कर निज विराट् स्वर में निनाद,
तू शैलराट्! हुंकार भरे,

फट जाय कुहा, भागे प्रमाद।
तू मौन त्याग, कर सिंहनाद,

रे तपी! आज तप का न काल।
नव-युग-शंखध्वनि जगा रही,

तू जाग, जाग, मेरे विशाल!

रामधारी सिंह दिनकर

समादृत कवि और निबंधकार। ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित

सात्विक भोजन, हेल्दी शरीर

डिटॉक्स और वेट लॉस का डबल फायदा

@ सौम्या चौबे

नवरात्रि सिर्फ पूजा-पाठ और भक्ति का समय नहीं है, बल्कि यह शरीर और मन दोनों को शुद्ध करने का भी अवसर है। व्रत के दौरान जहां मनुष्य आध्यात्मिक साधना करता है, वहीं अगर सही खानपान का पालन किया जाए तो शरीर को डिटॉक्स करने और अतिरिक्त वजन घटाने का यह बेहतरीन मौका बन सकता है। इसी कड़ी में चल रहे नवरात्रि वेट लॉस चैलेंज का आज तीसरा दिन है। पहले दो दिनों के डाइट प्लान में सात्विक भोजन, भरपूर फाइबर और हल्के-फुल्के विकल्पों को शामिल किया गया था। अब तीसरे दिन का डाइट प्लान सामने है, जिसमें न सिर्फ पोषण का ध्यान रखा गया है, बल्कि स्मार्ट खाने के जरिए फैट बर्न करने पर भी जोर है।

सुबह की शुरुआत कैसी हो?

कहा जाता है कि दिन की पहली आदत पूरे दिन की ऊर्जा और मेटाबॉलिज्म को तय करती है। तीसरे दिन की शुरुआत आप गुनगुने पानी, नींबू और शहद से कर सकते हैं। यह साधारण सा उपाय शरीर को डिटॉक्स करता है और फैट बर्निंग की प्रक्रिया को तेज करता है। विशेषज्ञ भी मानते हैं कि सुबह खाली पेट एप्पल साइडर विनेगर ड्रिंक लेना वजन घटाने के लिए फायदेमंद है। यह न सिर्फ मेटाबॉलिज्म को बढ़ाता है, बल्कि पेट को लंबे समय तक हल्का और आरामदायक महसूस कराता है।

ब्रेकफास्ट में क्या खाएं?

व्रत के नाश्ते में आपको ऊर्जा और फाइबर का सही संतुलन बनाए रखना है।

साबुदाना खिचड़ी – इसे कम तेल में तैयार करें। मूंगफली की जगह खीरा या टमाटर डालकर पौष्टिकता बढ़ा सकते हैं।

इसके साथ एक सेब या केला खा सकते हैं। ये फल फाइबर और मिनरल्स से भरपूर होते हैं।

नाश्ते के बाद एक कप ग्रीन टी या नींबू पानी ले सकते हैं, जो मेटाबॉलिज्म को सक्रिय करता है और शरीर में अतिरिक्त फैट को पचाने में मदद करता है।

लंच का संतुलन

दोपहर के खाने में हल्के और सात्विक विकल्प सबसे बेहतर माने जाते हैं।

कुट्टू के आटे की रोटी और लो फैट दही – यह संयोजन न सिर्फ पेट भरने वाला है बल्कि पचने में भी आसान है।

अगर विविधता चाहिए तो सिंघाड़े के आटे और उबले आलू से बना पराठा भी खा सकते हैं। ध्यान रहे, इसे घी

में नहीं बल्कि तवे पर सेंकें।

लंच में खीरा, टमाटर और गाजर का सलाद जरूर शामिल करें। यह शरीर को हाइड्रेट रखने के साथ-साथ फाइबर भी देता है।

स्नैक्स में क्या लें?

शाम के समय अक्सर लोग तैलीय और मीठी चीजों की ओर आकर्षित हो जाते हैं। लेकिन वजन घटाने के लिए समझदारी यही है कि हल्के और हेल्दी विकल्प अपनाएं।

आप मखाने हल्का भूनकर खा सकते हैं। यह प्रोटीन और कैल्शियम से भरपूर होते हैं।

नारियल पानी या छाछ प्यास बुझाने और शरीर को

ठंडक देने का अच्छा विकल्प है।

अगर फल खाने का मन हो तो पपीता या अमरूद चुनें। ये न केवल पचने में आसान हैं बल्कि इम्यूनिटी भी बढ़ाते हैं।

डिनर को रखें हल्का

रात का खाना हमेशा हल्का होना चाहिए, खासकर तब जब लक्ष्य वजन घटाना हो।

तीसरे दिन डिनर में आप साबूदाना या लौकी का चिल्ला ले सकते हैं। यह हल्का होते हुए भी पेट भरने वाला विकल्प है।

साथ में एक कटोरी फल या उबली सब्जियां जरूर

रखें।

डिनर से पहले या बाद में आप तुलसी या दालचीनी वाली हर्बल टी ले सकते हैं। यह पाचन को बेहतर करती है और नींद को भी गहरा बनाती है।

क्या न खाएं?

व्रत में अक्सर लोग ऐसे स्नैक्स खा लेते हैं जो वजन घटाने के प्रयास को बिगाड़ सकते हैं। तले-भुने व्रत स्नैक्स जैसे आलू चिप्स या पकौड़ी से दूरी बनाएं। ज्यादा नमक या चीनी वाले पैकड फूड्स से बचें। मिठाइयां और मावा से बनी चीजें वजन घटाने में सबसे बड़ी बाधा हैं। अधिक घी और तेल का प्रयोग बिल्कुल न करें।

मोटापा घटाने के लिए अन्य टिप्स

सिर्फ डाइट ही नहीं, बल्कि जीवनशैली में भी बदलाव जरूरी है।

30 मिनट वॉक या योग – रोजाना आधा घंटा पैदल चलना या योगासन जैसे सूर्य नमस्कार और प्राणायाम करने से फैट तेजी से घटता है।

पानी का सेवन – दिनभर में 2.5 से 3 लीटर पानी जरूर पिएं। यह शरीर को डिटॉक्स करता है और पाचन को बेहतर बनाता है।

नींद पूरी करें – नींद की कमी से वजन घटाना मुश्किल हो जाता है। रोजाना 7-8 घंटे की नींद जरूरी है।

खाने के बीच लंबा गैप न रखें – हर 3-4 घंटे में कुछ हल्का जरूर लें ताकि मेटाबॉलिज्म सक्रिय बना रहे।

नवरात्रि और शरीर का संतुलन

नवरात्रि का तीसरा दिन वेट लॉस चैलेंज का अहम पड़ाव है। इस दिन की डाइट में सात्विकता के साथ पोषण और फैट बर्निंग का सही संतुलन होना चाहिए। अगर आप ऊपर बताए गए भोजन और आदतों को अपनाते हैं तो न केवल वजन घटेगा बल्कि शरीर हल्का और ऊर्जावान महसूस करेगा। विशेषज्ञ मानते हैं कि नवरात्रि जैसे व्रत शरीर के लिए प्राकृतिक डिटॉक्स का काम करते हैं। इससे पाचन तंत्र को आराम मिलता है और खून साफ होता है। यही वजह है कि नौ दिन का यह व्रत अगर सही खानपान के साथ किया जाए तो लंबे समय तक स्वास्थ्य लाभ मिल सकते हैं। नवरात्रि का व्रत सिर्फ आध्यात्मिक साधना नहीं, बल्कि स्वास्थ्य की दृष्टि से भी बेहद लाभकारी है। तीसरे दिन का डाइट प्लान इस बात का प्रमाण है कि सही खानपान और जीवनशैली के साथ व्रत को अपनाया जाए तो यह वजन घटाने की एक प्राकृतिक और सुरक्षित विधि साबित हो सकती है।



नई जीएसटी: सस्ते दामों का नया सफर

आज, 22 सितंबर 2025 को, भारत में जीएसटी का नया रूप शुरू हो गया है। इसे जीएसटी 2.0 कहते हैं। पहले, टैक्स की दरें जटिल थीं—0 प्रतिशत से लेकर 28 प्रतिशत तक। अब चीजें आसान हो गई हैं। ज्यादातर सामान पर दो मुख्य दरें होंगी: 5 प्रतिशत जरूरी चीजों के लिए और 18 प्रतिशत आम सामान के लिए। कुछ लगजरी या नुकसानदेह चीजों पर 40 प्रतिशत तक टैक्स लगेगा। यह बदलाव नवरात्रि के साथ आया है, ताकि त्योहारों में खरीदारी सस्ती हो। लेकिन सवाल यह है कि इससे हमारी जिंदगी कैसे बदलेगी? क्या आपकी किराने की टोकरी हल्की होगी या कुछ चीजें बोझ बनेंगी? आइए, धीरे-धीरे समझते हैं।

यह सुधार सरकार का बड़ा कदम है। यह उपभोक्ताओं को राहत देगा, लेकिन व्यापारियों के लिए नई चुनौतियां भी लाएगा। कुल मिलाकर, 375 चीजें सस्ती होंगी, 50 सामान पर टैक्स शून्य हो जाएगा। फिर भी, कुछ चीजों की कीमतें बढ़ेंगी। यह बदलाव अर्थव्यवस्था को गति दे सकता है, लेकिन क्या यह सबके लिए फायदेमंद होगा? जीएसटी काउंसिल की सिफारिश पर बना यह ढांचा पुराने जटिल स्लैब को सरल करता है। अब 99 प्रतिशत दैनिक सामान इन दो स्लैब में आएंगे।

उदाहरण के लिए, दूध और दवाइयां सस्ती होंगी, लेकिन सॉफ्ट ड्रिंक्स महंगे। सरकार का कहना है कि इससे जीडीपी में 0.7 से 0.8 प्रतिशत की बढ़ोतरी हो सकती है। लेकिन आम आदमी सोच रहा है—क्या यह बचत मेरी जेब तक पहुंचेगी? व्यापारी कहते हैं कि अनुपालन आसान होगा, लेकिन कीमतें तुरंत कैसे बदलेंगी? यह बदलाव न सिर्फ खरीदारी को प्रभावित करेगा, बल्कि रोजगार और विकास को भी। आइए, अब विस्तार से देखें।

सस्ती खुशहाली: रोजमर्रा की चीजें जो जेब पर हल्की पड़ेंगी

कल्पना करें, आप बाजार जाते हैं और दूध का पैकेट पहले से सस्ता मिलता है। जी हां, जीएसटी 2.0 से कई जरूरी चीजें सस्ती हो गई हैं। पहले इन पर 12 या 18 प्रतिशत टैक्स था। अब ज्यादातर 5 प्रतिशत पर आ गईं। इससे आपकी मासिक खरीदारी में 50 से 100 रुपये की बचत हो सकती है। यह सिर्फ आंकड़े नहीं, आपकी रसोई की कहानी है। आइए, कुछ उदाहरण देखें।

सबसे पहले, दूध और डेयरी प्रोडक्ट्स। अल्ट्रा-हाई टेम्परेचर मिल्क, पनीर, चीज, दही—ये अब 0 प्रतिशत टैक्स पर हैं। पहले ये 5 या 12 प्रतिशत पर थे। एक लीटर दूध का पैकेट जो 60 रुपये का था, अब 5-6 रुपये सस्ता हो सकता है। अगर आपके घर में बच्चे हैं, तो यह राहत बड़ी है। सूखे मेवे जैसे बादाम, काजू, अखरोट—पहले 12 प्रतिशत, अब 5 प्रतिशत। एक किलो बादाम 800 रुपये का था, अब 40 रुपये सस्ता। यह स्वास्थ्य और जेब दोनों के लिए अच्छा है।

फल-सब्जियों की बात करें। सूखे फल जैसे अंजीर, खजूर, आम, संतरा—ये अब 5 प्रतिशत पर। पहले 12 प्रतिशत था। एक किलो खजूर 300 रुपये का, अब 15 रुपये सस्ता। ताजा फल पहले से ही सस्ते थे, यह बदलाव सूखे फलों पर ज्यादा असर डालेगा। रोटी-ब्रेड वालों को भी राहत। खाखरा, चपाती, पराठा—अब 0 प्रतिशत। पहले 5 प्रतिशत था। बेकरी आइटम्स सस्ते होंगे, खासकर नवरात्रि में।



घरेलू सामान में बड़ा बदलाव। साबुन, शैंपू, टूथपेस्ट, टैल्कम पाउडर—पहले 18 प्रतिशत, अब 5 प्रतिशत। एक साबुन 20 रुपये का, अब 1.50 रुपये सस्ता। बाल्टी, प्लेट, रबर बैंड जैसी छोटी चीजें भी सस्ती। मोमबत्ती, फ्रीडिंग बॉटल—ये सब सस्ते। पेपर प्रोडक्ट्स जैसे नोटबुक, पेंसिल शार्पनर, इरेजर—0 प्रतिशत। बच्चों की स्कूल की किताबों का खर्च कम होगा।

इलेक्ट्रॉनिक्स और कारों में भी फायदा। टीवी, फ्रिज, एसी, डिशवाशर—पहले 18-28 प्रतिशत, अब 18 प्रतिशत पर स्थिर या कम। एक 55 इंच टीवी 50000 रुपये का, अब 2000-3000 सस्ता। कारें और बाइक भी। छोटी कारों पर 18 प्रतिशत, जो पहले ऊंचा था। किसानों के लिए ट्रैक्टर, हार्वेस्टर—5 प्रतिशत। एक ट्रैक्टर 10 लाख का, अब 10000 रुपये कम। दवाइयां और इंश्योरेंस में राहत। ज्यादातर दवाएं 0 प्रतिशत, हेल्थ और लाइफ इंश्योरेंस टैक्स-फ्री। पहले 18 प्रतिशत था। सालाना प्रीमियम 10000 रुपये का, अब पूरा बचेगा।

कुल 375 आइटम सस्ते हुए। इससे खपत बढ़ेगी। लेकिन क्या कंपनियां यह बचत ग्राहकों तक पहुंचाएंगी? कुछ कंपनियां पहले ही कीमतें घटा रही हैं, खासकर त्योहारों में डिस्काउंट के साथ। छोटे दुकानदार कहते हैं कि सप्लाई चेन में देरी से फायदा तुरंत न मिले। यह बदलाव सकारात्मक है, लेकिन धैर्य चाहिए। क्या आपकी अगली खरीदारी में फर्क दिखेगा?

महंगे मोड़: कुछ चीजें जो जेब कसैंगी

हर सिक्के के दो पहलू होते हैं। जीएसटी 2.0 से सस्ती चीजें तो हैं, लेकिन कुछ सामान महंगे भी हुए। लगजरी और नुकसानदेह चीजों पर टैक्स 40 प्रतिशत तक गया। पहले 28 प्रतिशत प्लस सेस था। यह बदलाव स्वास्थ्य और पर्यावरण को ध्यान में रखकर किया गया। लेकिन आम आदमी के लिए इसका क्या मतलब? आइए, समझें।

सॉफ्ट ड्रिंक्स सबसे ऊपर हैं। कोल्ड ड्रिंक्स, एनर्जी ड्रिंक्स—पहले 28 प्रतिशत, अब 40 प्रतिशत। एक लीटर कोक 50 रुपये का, अब 6 रुपये महंगा। युवा पीढ़ी पर

असर पड़ेगा। फिर, एसयूवी और लगजरी कारें। बड़ी गाड़ियां पहले 28 प्लस सेस, अब 40 प्रतिशत। एक एसयूवी 20 लाख की, अब 20000-30000 महंगी। अमीरों के लिए ठीक, लेकिन मध्यम वर्ग सोचेगा।

सिन गुट्स जैसे तंबाकू, सिगरेट, गुटखा—28 प्रतिशत प्लस सेस रहेगा, लेकिन कुछ पर बढ़ोतरी। बीड़ी रैपर लीव्स पहले ऊंचा, अब 5 प्रतिशत, लेकिन सिगरेट महंगी। एक पैकेट 100 रुपये का, अब 5 रुपये ज्यादा। स्वास्थ्य के लिए अच्छा, लेकिन नशे की लत वालों को परेशानी। अल्कोहल पर राज्य टैक्स अलग, लेकिन जीएसटी प्रभावित करेगा।

अन्य चीजें: कुछ प्रोसेस्ड फूड जैसे चॉकलेट, पास्ता—18 प्रतिशत पर स्थिर, लेकिन कुछ पर मामूली बढ़ोतरी। सोना 3 प्रतिशत पर, पहले भी यही। लेकिन ज्वेलरी पर 5 प्रतिशत, जो पहले 3 था—हल्की बढ़ोतरी। एक सोने का हार 50000 का, अब 1000 महंगा। शादियों के सीजन में सोचना पड़ेगा।

कुल मिलाकर, 50 से कम आइटम महंगे हुए। ये ज्यादातर गैर-जरूरी हैं। सवाल यह है कि क्या यह बढ़ोतरी स्वास्थ्य को बढ़ावा देगी या सिर्फ राजस्व बढ़ाएगी? सरकार कहती है कि इससे बुरी आदतें कम होंगी। लेकिन छोटे व्यापारी चिंतित—महंगे सामान की बिक्री घटेगी। उपभोक्ता के लिए, चॉइस महत्वपूर्ण। सस्ती चीजें चुनें, तो बजट संभलेगा। क्या आप तैयार हैं बदलाव अपनाने को?

जिंदगी और बाजार पर नजर: फायदे-नुकसान की तुलना

यह बदलाव सिर्फ कीमतों का नहीं, पूरी अर्थव्यवस्था का है। आम आदमी के लिए, किराने का बिल 5-10 प्रतिशत कम हो सकता है। एक परिवार मासिक 5000 रुपये खर्च करता है, तो 250-500 रुपये बचत। त्योहारों में कार या टीवी खरीदना आसान। लेकिन महंगे सामान से मध्यम वर्ग पर दबाव। क्या यह असमानता बढ़ाएगा? अमीरों को लगजरी पर ज्यादा टैक्स, गरीबों को सस्ती जरूरतें—शायद संतुलन बने।

व्यापारियों के लिए, अनुपालन सरल। पहले कई स्लैब से रिटर्न भरना मुश्किल था। अब दो मुख्य दरें, विवाद कम। छोटे दुकानदार कहते हैं कि सॉफ्टवेयर अपडेट से शुरुआत में परेशानी, लेकिन लंबे में फायदा। बड़ी कंपनियां जैसे एलजी, सोनी—कीमतें घटा रही हैं। बिक्री बढ़ेगी, रोजगार के मौके। लेकिन सॉफ्ट ड्रिंक कंपनियां चिंतित, उत्पादन घटा सकती हैं।

अर्थव्यवस्था पर नजर डालें। जीडीपी ग्रोथ में 0.7-0.8 प्रतिशत जोड़। खपत बढ़ेगी, निवेश आएगा। निर्माण सामग्री जैसे सीमेंट सस्ता (18 प्रतिशत से 5), घर बनाने में राहत। लेकिन राजस्व पर असर? सरकार को कम टैक्स से चिंता, लेकिन वॉल्यूम बढ़ने से बैलेंस। विशेषज्ञ कहते हैं कि 6 महीने में असर दिखेगा। उपभोक्ता सोचे—क्या यह स्थायी राहत है या अस्थायी? व्यापारी तैयार रहें, नई दरों का पालन करें। क्या हमारा बाजार इससे मजबूत बनेगा?

कल की उम्मीदें: जीएसटी का आगे का सफर

जीएसटी 2.0 शुरू हो गया, लेकिन कहानी यहीं खत्म नहीं। भविष्य में और बदलाव आ सकते हैं। सरकार का लक्ष्य एक सिंगल रेट, लेकिन अभी यह चरणबद्ध। अगले साल, डिजिटल पेमेंट्स पर इंसेंटिव बढ़ सकते हैं। पर्यावरण पर फोकस—इलेक्ट्रिक कारें सस्ती रहेंगी। लेकिन चुनौतियां भी। महंगाई नियंत्रण में क्या मदद? अगर कंपनियां लाभ न बांटें, तो उपभोक्ता नाराज।

सोचिए, एक साल बाद। आपकी जेब हल्की, बाजार चहकता। लेकिन क्या छोटे शहरों तक फायदा पहुंचेगा? ग्रामीण क्षेत्रों में सप्लाई चेन मजबूत होनी चाहिए। सरकार को निगरानी रखनी होगी। विशेषज्ञ सलाह देते हैं—बजट बनाएं, सस्ती चीजें चुनें। व्यापारियों के लिए, ट्रेनिंग लें। यह बदलाव भारत को मजबूत बनाएगा, लेकिन सबकी भागीदारी जरूरी। क्या हम इस अवसर को गंवा देंगे या अपनाएंगे? समय बताएगा। आज से शुरू करें—अगली खरीदारी में फर्क महसूस करें। जीएसटी 2.0 सिर्फ टैक्स नहीं, नई शुरुआत है।

दो जीतों के बाद सूर्यकुमार का बयान क्या अब कोई दुश्मनी बाकी है?

एशिया कप 2025 में भारत और पाकिस्तान का मैच देखकर ऐसा लगा जैसे पुरानी फिल्म का नया सीन हो। भारत ने ग्रुप स्टेज में पाकिस्तान को सात विकेट से हराया। फिर सुपर फोर में भी छह विकेट से जीत हासिल की। अब एशिया कप में भारत की पाकिस्तान पर 12-3 की बढ़त हो गई है। लेकिन मैच के बाद भारतीय कप्तान सूर्यकुमार यादव ने कहा, “अब यह कोई दुश्मनी नहीं रही।” उन्होंने बताया कि पिछले सात मैचों से भारत लगातार जीत रहा है। अगर 10-15 मैचों में स्कोर 13-0 हो जाए तो इसे प्रतियोगिता कैसे कहें? यह बयान सुर्खियां बन गया। सोशल मीडिया पर बहस छिड़ गई। कोई कहता है, हां, अब तो भारत का दबदबा है। कोई कहता है, नहीं, दिल की धड़कन अभी भी तेज है।

यह सवाल बड़ा है। क्या वाकई भारत-पाक के बीच की पुरानी आग ठंडी पड़ गई है? या सिर्फ मैदान पर भारत आगे निकल गया, लेकिन जज्बात वही हैं? आज हम इसी पर बात करेंगे। एशिया कप 2025 के इन दो मैचों के बाद क्या बदला? हम पुरानी यादों से लेकर आज की हकीकत तक देखेंगे। बात को सरल रखेंगे, जैसे घर में चाय पीते हुए चर्चा हो। क्योंकि क्रिकेट तो सिर्फ खेल नहीं, दो देशों की कहानी है। सूर्यकुमार का बयान सोचने पर मजबूर करता है। क्या अब मैच सिर्फ रूटीन हो गए हैं? या अभी भी कुछ बाकी है?

मैच के दौरान दुबई के स्टेडियम में दर्शक चिल्ला रहे थे। अभिषेक शर्मा ने 39 गेंदों पर 74 रन ठोके। शुभमन गिल ने 47 रन बनाए। पाकिस्तान ने 171 रन बनाए, लेकिन भारत ने 18.5 ओवर में लक्ष्य हासिल कर लिया। कोई बड़ा ड्रामा नहीं। बस शांत जीत। लेकिन मैच के बाद हाथ न मिलाने की घटना ने आग लगा दी। भारतीय खिलाड़ी पाकिस्तानी टीम से दूर रहे। पाकिस्तान ने शिकायत की। इससे लगता है कि मैदान के बाहर तनाव अभी भी है। सूर्यकुमार ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा, “अगर दो टीमों बराबरी की लड़ाई लड़ें तो दुश्मनी कहें। यहां तो एकतरफा है।” यह बात सच्ची लगती है। लेकिन क्या फैस इसे मान लेंगे? चलिए, थोड़ा पीछे चलते हैं।

पुरानी यादें: जब भारत-पाक मैच दिल थाम लेते थे

कल्पना कीजिए, 1990 का दशक। टेलीविजन पर भारत-पाक मैच आता तो पूरा मोहल्ला सन्न रह जाता। बच्चे सड़क पर खेलना भूल जाते। बूढ़े चाय की प्याली थामे बैठे रहते। वह दौर था जब यह दुश्मनी असली थी। दोनों टीमों बराबरी पर लड़तीं। कभी भारत जीतता, कभी पाकिस्तान। याद है 1992 का वर्ल्ड कप? पाकिस्तान ने भारत को हराया था। या 2007 का टी20 वर्ल्ड कप फाइनल? भारत ने पाकिस्तान को हराकर खिताब जीता। वह मैच रातभर जागने लायक था।

इस दुश्मनी की जड़ें गहरी हैं। 1947 के बंटवारे से शुरू। क्रिकेट दोनों देशों के लिए सिर्फ खेल नहीं, पहचान बन गया। विकिपीडिया पर लिखा है कि सीनियर लेवल पर भारत ने 7 आईसीसी ट्रॉफी जीतीं, पाकिस्तान ने 3।

लेकिन पुराने दिनों में स्कोर करीब-करीब बराबर था। एशिया कप में भी पहले 5-5 या 6-4 जैसा था। फैस के लिए यह मैच जंग था। भारत में लोग नीली जर्सी पहनकर सड़कों पर निकल पड़ते। पाकिस्तान में हरे झंडे लहराते।

एक उदाहरण लीजिए। 2011 वर्ल्ड कप सेमीफाइनल। भारत ने पाकिस्तान को हराया। पूरा देश जश्न में डूब गया। वह जीत इतनी बड़ी थी कि लगता था इतिहास बदल गया। या 2017 का चैंपियंस ट्रॉफी फाइनल। पाकिस्तान ने भारत को हराकर ट्रॉफी उड़ाई। वह हार भारत के लिए सदमा थी। इन मैचों में ड्रामा होता। आखिरी ओवर में हार-जीत का फैसला। खिलाड़ी एक-दूसरे को घूरते। फैस सोशल मीडिया पर लड़ते। वह दौर रोमांचक था। दोनों टीमों मजबूत थीं। भारत के पास सचिन, द्रविड़। पाकिस्तान के पास अकरम, इनजमाम। बराबरी थी।

हाल की हार: पाकिस्तान क्यों पीछे रह गया?

अब बात हाल की। एशिया कप 2023 में भारत ने पाकिस्तान को दो बार हराया। ग्रुप स्टेज में 10 विकेट से। सुपर फोर में भी आसानी से। फिर 2025 चैंपियंस ट्रॉफी में भारत ने 6 विकेट से जीत ली। विराट कोहली ने 51वां शतक लगाया। अब एशिया कप 2025 में फिर वही। दो मैच, दो जीत। सुपर फोर में पाकिस्तान 171 पर ऑलआउट। भारत ने 174 का पीछा 18.5 ओवर में कर लिया। अभिषेक शर्मा हीरो बने।

सूर्यकुमार सही कहते हैं। पिछले सात द्विपक्षीय मैचों में भारत अजेय। कुल मिलाकर टी20 में भारत का रिकॉर्ड शानदार। लेकिन पाकिस्तान क्यों पीछड़ गया? कई वजहें हैं। सबसे बड़ी, आर्थिक। भारत का आईपीएल दुनिया का सबसे बड़ा लीग है। खिलाड़ी लाखों कमाते हैं। नई टैलेंट आती रहती है। पाकिस्तान का पीएसएल छोटा है। खिलाड़ी विदेश जाते हैं। घरेलू क्रिकेट कमजोर। दूसरी, कोचिंग सिस्टम। भारत में बीसीसीआई ने अकादमियां बनाईं। पाकिस्तान में राजनीति हावी। कप्तान बदलते रहते।

एक रिपोर्ट कहती है कि पाकिस्तान के पास शाहीन अफरीदी जैसे गेंदबाज हैं। लेकिन फखर ने 58 रन बनाए, फिर भी टीम लड़खड़ा गई। हारिस रऊफ ने भारतीय फैस को 6-0 का इशारा किया। गुस्सा आया। लेकिन मैदान पर प्रदर्शन कमजोर। भारत के पास जसप्रीत बुमराह, कुलदीप यादव जैसे स्टार।

स्पिन और पेस दोनों में मजबूत। पाकिस्तान मिडल ऑर्डर लड़खड़ाता है।

फिर भी, पाकिस्तान के फैस उम्मीद नहीं छोड़ते। वे कहते हैं, एक अच्छा दिन आएगा। लेकिन आंकड़े साफ हैं। 2025 तक भारत ने आईसीसी रैंकिंग में पाकिस्तान को पीछे छोड़ दिया। यह दूरी बढ़ रही है। सूर्यकुमार का बयान कड़वा है, लेकिन हकीकत। क्या पाकिस्तान वापसी करेगा? शायद अगर सुधार हो। लेकिन अभी तो भारत का बोलबाला है। यह सोचने लायक है कि क्या यह एकतरफा हो गया?

फैस की नजर में: जज्बात अभी भी ज्वाला है

मैदान पर जो हो, फैस के दिल में तो आग बाकी है। एक्स पर देखिए। एक यूजर लिखता है, “यह दुश्मनी मरी नहीं। भारत जीतता है, लेकिन पाकिस्तान से हारना कोई नहीं चाहता।” दूसरा कहता है, “सूर्यकुमार सही हैं। अब तो भारत का दबदबा।” बहस चल रही। एक पोस्ट में लिखा, “पुराने दिनों में 8-7 का स्कोर था। अब 13-1।”

लेकिन जज्बा वही।”

भारतीय फैस जश्न मना रहे। सोशल मीडिया पर मीम्स वायरल। पाकिस्तानी फैस गुस्से में। कोई कहता, “हाथ न मिलाना गलत। लेकिन क्रिकेट में खेलो।” दुबई मैच के बाद विवाद बढ़ा। पाकिस्तान ने एसीसी से शिकायत की। भारतीय खिलाड़ी बोले, “सुरक्षा कारण।” लेकिन फैस जानते हैं, तनाव पुराना है। राजनीति क्रिकेट में घुस आई।

दोनों तरफ फैस भावुक। भारत में बच्चे अभिषेक शर्मा को हीरो मानते। पाकिस्तान में युवा कहते, “एक दिन हम जीतेंगे।” यह दुश्मनी सिर्फ मैच नहीं। संस्कृति की। भारत में दिवाली पर पटाखे, पाकिस्तान में ईद पर मिठाई। लेकिन क्रिकेट जोड़ता है। या तोड़ता है। एक सर्वे कहता है कि एशिया में सबसे ज्यादा देखा जाने वाला मैच भारत-पाक। ऑस्ट्रेलिया-इंग्लैंड से ज्यादा।

भविष्य की तस्वीर: क्या बदलेगा यह समीकरण?

अब सवाल भविष्य का। एशिया कप 2025 खत्म हो रहा। भारत फाइनल की ओर। पाकिस्तान बाहर। लेकिन अगला वर्ल्ड कप 2026 में। वहां फिर भिड़ंत। क्या तब कुछ बदलेगा? पाकिस्तान अगर सुधार करे तो हां। नए खिलाड़ी आएंगे। कोच बदलेगा। लेकिन भारत रुकेगा नहीं। आईपीएल और बड़ा हो रहा।

सूर्यकुमार का बयान सोचने लायक। यह कहता है कि क्रिकेट बदल रहा। अब ताकत से जीत होती। लेकिन दुश्मनी जज्बात से। शायद मैदान पर एकतरफा, लेकिन दिलों में बराबर। दोनों देशों को चाहिए शांति। क्रिकेट पुल बने। हाथ मिलाएं। राजनीति को बाहर रखें।

एक तरफ भारत का विकास। दूसरी तरफ पाकिस्तान की चुनौतियां। लेकिन उम्मीद है। क्रिकेट सिखाता है, हार से सीखो। पाकिस्तान सीखेगा तो वापसी होगी। तब दुश्मनी फिर रोमांचक बनेगी। वरना सूर्यकुमार सही। बस एकतरफा मैच। लेकिन फैस को क्या? वे तो जश्न मनाएंगे। सोचिए, क्या हम तैयार हैं बदलाव के लिए? या पुरानी यादों में जीते रहें? यह सवाल हर फैन के मन में।





प्रभु कृपा दुख निवारण समागम

BY

**Arihanta
Industries**

- BHRINGRAJ
- AMLA
- REETHA
- SHIKAKAI

100 ML

15 ML



**ULTIMATE
HAIR
SOLUTION**

NO

ARTIFICIAL
COLOR
FRAGRANCE
CHEMICAL

KESH VARDAK SHAMPOO

The complete solution of all hair problems:

- Prevent hair fall and make hair follicle strong.
- Promote hair growth.
- Free from all artificial & harmful chemicals like., SLS.
- 100% pure ayurvedic shampoo.
- Suitable for all hair types.



ORDER ONLINE @ :

amazon

arihanta.in

Arihanta Industries